# Field Studies on the Impact of COVID-19 in the villages of hill districts of Uttarakhand

1. Impact of COVID-19 lockdown in the villages of hill districts of Uttarakhand (August 2020)

2. COVID19 effects: Main findings about migrants: Based on a survey conducted by USNPSS in September 2020

3. Migrants returned to villages after the COVID19 lockdown (Survey: January 2021)

4. Effects of the second wave of COVID-19 pandemic in hill villages of Uttarakhand (June 2021)

**Impact of COVID-19 lockdown in the villages of hill districts of Uttarakhand**

This study is an attempt to understand the effect of COVID-19 lockdown in the villages where we have been working. In this survey, residents of 58 villages in 5 districts of Uttarakhand (Almora, Bageshwar, Champawat, Chamoli and Pithoragarh) participated. A simple questionnaire was prepared by the USNPSS and filled up by our village learning centre facilitators and supervisors (between April to July 2020) on the basis of the feedback they received from the villagers.

Possibly, there may be drawbacks/loopholes in the process of preparing and filling the questionnaire, but it still reflects the main effects on the villages due to the COVID-19 lockdown.

The following points emerge:

1. By and large, no negative effect on farming was noticed. A positive effect showed that both the residents and the migrants paid more attention to farming in the lockdown period. Villagers doing other businesses in the nearby towns / cities (shops, roadside restaurants, taxi etc.) and the migrant population working in cities (inside/outside Uttarakhand) were greatly affected.
2. No shortage of the supply/availability of grains/other essential goods was noticed. Other things (vegetables, LPG etc.) also did not cause serious problems. Health care services were affected significantly in some villages. The impact of not having any means of transport was reported as the biggest problem, which hindered the purchase of everyday things from the market, taking the sick to the hospital or selling vegetables, milk and fruits produced in the village. Apart from this, there is a mention of negative impact on the construction works in some places.

3. The closure of the school and the village learning centres (VLCs) had significant negative impact on the children's education and creative activities.
4. As long as liquor shops remained closed and alcohol was not available, social atmosphere of the villages remained peaceful but as soon as the sale of liquor was restored, the old situation came back.
5. The auspicious ceremonies (wedding, naming the new born etc.) were mostly postponed. People followed government guidelines (social distancing and use of cloth- masks) during occasions such as cremation of the dead in the villages. There is an atmosphere of fear (outbreak of epidemic in the village, concern for employment etc) and future of their children in many of the villages.
6. In all the villages, people appear satisfied and happy with the relief (cash and rations) provided by the government.

***

August 2020 Kamal Joshi

## कोविड-19 लॉकडाउन का प्रभाव (प्रश्नावली)

**नोट:** यह अध्ययन केवल गाँवों में कोविड-19 लॉकडाउन के प्रभाव को सरसरी तौर पर समझने का प्रयास है. यह अध्ययन उत्तराखण्ड के 5 जनपदों- अल्मोड़ा, बागेश्वर, चमोली, चम्पावत और पिथोरागढ़ में स्थित 7 ग्राम-समूहों के कुल 58 गाँवों/तोकों में लोगों की राय के आधार पर किया गया है. किया गया है. इसके लिये तैयार प्रश्नावली को हमारी सहयोगी संस्थाओं के कार्यकर्ताओं और ग्राम शिक्षण केन्द्र की संचालिकाओं द्वारा अप्रैल से जुलाई 2020 के दौरान सम्बन्धित गांवों के निवासियों के साथ बातचीत (ज्यादातर प्रत्यक्ष और कुछ में फ़ोन द्वारा) तथा गाँव की दशा को देख-सुनकर भरा गया है.

| कार्यक्षेत्र/ वि.ख./जनपद | गांवों की संख्या और नाम |
|---|---|
| मैचून (वि.ख. धौलादेवी, अल्मोड़ा) | खोला, मनिआगर, मौनी, बान्ठोक (4) |
| दन्या (वि.ख. धौलादेवी, अल्मोड़ा) | गौली, मुनौली, टकोली, डसीली, धारागाड़, बसाण, कोट्यूड़ा (7) |
| शामा (वि.ख. कपकोट, बागेश्वर) | नामिक, तल्ला नामिक, मल्ला धारी, गोगिना, हिनारी, मलखा दुगर्चा (6) |
| गणाई गंगोली (वि.ख. गंगोलीहाट, पिथौरागढ़) | भालूगाड़ा, फडियाली, भन्याणी, ग्वाड़ी (4) |
| पाटी (वि.ख. पाटी, चम्पावत) | तोली, पम्तोला, रौलमेल, जनकांडे, मल्ला कमलेख, मारागाँव, लाधौन, कड़वालगाँव, धूनाघाट, गरसाड़ी, जेरोली, गूम, लखनपुर, बिसारी, भट्यूणा (15) |
| कर्णप्रयाग (वि.ख. कर्णप्रयाग चमोली) | पुडियाणी, कफलोड़ी, सुनारग्वाड़, चौण्डली, जाख, सुन्दरगाँव, बैनोली, छातोली, कुकड़ई, बधाणी (10) |
| गोपेश्वर (वि.ख. दशौली, चमोली) | सरोली, दशौली, देवलधार, मण्डल, खल्ला, ग्वाड़, कोटेश्वर, कठूड़, दोगडी-कांडई, बमियाला, बणद्वारा, कांडई (12) |
| | गांवों की संख्या= 58 |

1. **सबसे ज्यादा असर:** रोजगार पर सबसे ज्यादा असर पड़ा. गाँव के बाहर प्राइवेट नौकरी करने वाले, स्थानीय टैक्सी वाले, दुकानदार, होटल-ढाबे वाले और मजदूर- इनका रोजगार प्रभावित हुआ. अधिकतर ने प्रवासी कामगारों (34 प्रपत्रों में), गाँव/आसपास दुकान, होटल/ढाबे (14 प्रपत्रों में), टैक्सी चालक/मालिक (10 प्रपत्रों में) या मजदूरी (16 प्रपत्रों में) करने वालों पर सबसे ज्यादा असर पड़ने का उल्लेख किया

है. **“गाँव में जो प्रभावित (प्रवासी) भाई-बहिन आये हैं उनके सामने रोजगार की संभावनाएँ तलाशने में काफ़ी दिक्कत आ रही है और आर्थिक स्थिति ख़राब हो रही है” (बसाण, दन्या).** खेतीबाड़ी पर ख़राब असर का उल्लेख केवल 2 प्रपत्रों में किया है. बच्चों की शिक्षा सबसे ज्यादा प्रभावित होने का उल्लेख 19 प्रपत्रों में है. **”गाँव में सबसे ज्यादा असर बच्चों की पढ़ाई पर पड़ा” (कफलोड़ी, कर्णप्रयाग). “स्कूल पर सबसे ज्यादा असर हुआ क्योंकि बच्चों के पेपर नहीं हुवे और 2-3 महीने से स्कूल बंद हैं.”** (खल्ला, चमोली). बीमारों और लॉकडाउन के कारण घर से दूर फँसे व्यक्तियों की परेशानी का उल्लेख एक-दो प्रपत्रों में ही है.
कुछ अन्य प्रभावों का भी उल्लेख किया है- **“छुआछूत की मानसिकता का पुनर्जन्म हो रहा है” (तोली, चम्पावत), भय का माहौल (पाटी के अनेक प्रपत्र)**

2. **आय पर प्रभाव (आजीविका/आर्थिक-क्षेत्र):** व्यवसाय, सेवा-क्षेत्र से जुड़े लोगों की आय पर सबसे ज्यादा प्रभाव दिखा. सबसे ज्यादा प्रपत्रों में टैक्सी संचालन से जुड़े लोगों की आय पर बहुत ज्यादा असर का उल्लेख है. दुकानदारी/ढाबे चलाने वालों की आय पर बहुत ज्यादा असर का उल्लेख 20 प्रपत्रों में तथा थोडा असर पड़ने का 12 प्रपत्रों में है. खेतीबाड़ी पर 28 प्रपत्रों में कोई असर नहीं और 7 प्रपत्रों में थोड़ी असर पड़ने का उल्लेख है, खेतीबाड़ी पर ज्यादा असर पड़ने का उल्लेख किसी ने नहीं किया है. लेकिन डेयरी व्यवसाय पर 15 प्रपत्रों में (पाटी, दन्या, मैचून) बहुत ज्यादा असर और 23 में थोडा असर होने का उल्लेख है. व्यवसाय से जुड़े लोगों की आय पर थोड़ा असर पड़ा. कोटेश्वर में मछली-पालन प्रभावित हुआ.

| व्यवसाय | बहत ज्यादा असर | थोड़ा बहत असर | बिल्कल असर नहीं |
|---|---|---|---|
| खेतीबाड़ी | 0 | 7 | 28 |
| टैक्सी | 36 | 1 | 0 |
| डेयरी | 15 | 23 | 4 |
| दुकान/ढाबा आदि | 20 | 12 | 0 |

3. **इस अवधि में बेरोजगार हुए लोगों ने क्या काम किये?**: सबसे ज्यादा (44 प्रपत्रों में) खेतीबाड़ी की तरफ़ ध्यान दिये जाने का उल्लेख है. मनरेगा में मजदूरी का उल्लेख भी ज्यादा (18 प्रपत्र) है. इसके अलावा गाय, भेड़-बकरी पालने (11 प्रपत्र) अपने घर की मरम्मत और गाँव की साफ़-सफाई का काम (8-8 प्रपत्रों में उल्लेख) आदि काम भी किये.

4. **आवश्यक वस्तुओं/सेवाओं की आपूर्ति/उपलब्धता पर असर :** अनाज की कमी नहीं हुई. ईंधन-गैस (LPG) की आपूर्ति पर असर भी बहुत कम दिखा. एक तो ज्यादातर जगहों में एलपीजी की आपूर्ति बाधित नहीं हुई या ग्रामीणों ने फ़ोन करके मंगवा ली. दूसरा कारण, ग्रामीण क्षेत्रों में ईंधन-गैस के मुकाबले ईंधन लकड़ी पर ज्यादा निर्भरता है. जहाँ तक सब्जी की बात है सबसे ज्यादा प्रपत्रों में थोड़ा बहुत असर होने का उल्लेख है क्योंकि गाँव में उगने वाली सब्जियों से काम चल गया. स्वास्थ्य/चिकित्सा सेवाओं पर मिलाजुला असर पड़ा. यातायात के साधनों का उल्लेख तो 18 प्रपत्रों में ही है लेकिन सबने इसका बहुत ज्यादा असर पड़ने का उल्लेख किया है. 5 प्रपत्रों में नाई, मोची, हार्डवेयर की कमी का बहुत असर पड़ने का ज़िक्र है.

| वस्तु/सेवा | बहुत ज्यादा असर | थोड़ा बहुत असर | बिल्कुल असर नहीं |
|---|---|---|---|
| अनाज/राशन | 2 | 16 | 40 |
| सब्जी/फल | 8 | 41 | 8 |
| एलपीजी | 3 | 10 | 42 |
| स्वास्थ्य/चिकित्सा | 24 | 18 | 15 |
| यातायात | 18 | 0 | 0 |

**समाधान:** सबसे ज्यादा लोग अपनी खेतीबाड़ी पर ध्यान दे रहे हैं (20 प्रपत्र). उपभोग में कमी की और घर/गाँव में उपलब्ध सब्जियों से काम चलाया.यातायात बाधित होने के कारण आवश्यक यात्रायें ही कीं (बुकिंग पर वाहन) और बाज़ार से इकट्टा सामान ख़रीदा (11 प्रपत्र). अति-आवश्यक दवाइयाँ पुलिस की सहायता से मंगाई लेकिन साथ ही घरेलू दवाइयों के उपयोग और स्वास्थ्य-जागरूकता का उल्लेख भी (3-3 प्रपत्र) है. पाटी क्षेत्र में निजी मोटर वाहन ख़रीदे गये.

5. **शराब की आपूर्ति:** जब तक आपूर्ति बंद रही गांवों में पारिवारिक/सामाजिक माहौल शांतिपूर्ण और अच्छा रहा (41 प्रपत्रों में उल्लेख), लेकिन कालाबाजारी भी बढ़ी (13 प्रपत्र). कुछ गांवों में शराब पहले से बंद थी (5 प्रपत्र). लेकिन शराब की आपूर्ति शुरू होते ही गाँव का माहौल पहले जैसा हो गया.
6. **गाँव में उत्पादित चीजों की बिक्री पर असर:** स्थानीय भोजनालय, चाय की दुकानें बंद होने के कारण और कस्बों-शहरों तक यातायात उपलब्ध नहीं होने के कारण दूध (25 प्रपत्रों में बहुत ज्यादा, 14 में थोड़ा बहुत असर होने का ज़िक्र) और सब्जियों (16 में बहुत ज्यादा और 12 में थोड़ा बहुत असर होने का ज़िक्र) को बेचने में कठिनाई

हुई. दशौली क्षेत्र (चमोली) में दूध बाज़ार में बेचने की समस्या का हल पास बनाकर और पैदल रास्तों से बाज़ार जाकर निकाला. हस्त-शिल्प उत्पादों को बेचने में बहुत ज्यादा असर का उल्लेख 5 प्रपत्रों (शामा और गोपेश्वर क्षेत्र) में है. पाटी क्षेत्र में आड़ू, प्लम आदि फल बर्बाद हो गये.

**समाधान:** कुछ दिन तक दूध का घी बना लिया (4 प्रपत्र) बाद में पैदल बाज़ार ले जाकर बेचा. सब्जियां स्वयं उपयोग कीं और गाँव में बांटी/बेचीं (28 प्रपत्र). उपज (फल/सब्जियां) बर्बाद भी हो गयी (6 प्रपत्र).

7. **लॉकडाउन शुरू होने के बाद कितने लोग गाँव वापस लौट कर आये :**
   कुल मिलाकर 1521 प्रवासी वापस गाँव आये हैं जिनमें से 245 वापस चले गये या जाने वाले हैं. शामा के गोगिना (151) और मलखा दुगर्चा (200), कर्णप्रयाग के जाख (110), मैचून क्षेत्र के मनिआगर (130), पाटी के गरसाड़ी (110), (दन्या के टकोली (45) और डसीली (50) में अपेक्षाकृत अधिक संख्या में प्रवासी आये., अन्य में से भी अधिकतर परिस्थिति सामान्य होने के बाद वापस जाने
   के इच्छुक हैं (29 प्रपत्र) जबकि कुछ खेतीबाड़ी (16 प्रपत्र), गाँव में अन्य व्यवसाय (10 प्रपत्र)करना चाह रहे थे. कई (11 प्रपत्र) दुविधा और चिंता में हैं कि क्या काम करेंगे और कहाँ. ज्यादातर प्राइवेट कम्पनी (44 प्रपत्र), फैक्ट्री, होटल-ढाबे आदि (37 प्रपत्र) में कार्यरत थे. कुछ छात्र भी हैं (15 प्रपत्र) प्रदेश के बड़े शहरों में पढ़ रहे हैं. **(लौट कर आये तथा इनमें से गाँव में ही रोजगार करने का निश्चय कर चुके लोगों की संख्या पता लगाने के लिये इस प्रश्न को फिर से पूछने/अपडेट की ज़रूरत है).**

8. **गाँव में सामाजिक प्रभाव:** ज्यादातर शादियाँ स्थगित हुईं, कुछ ही सादगीपूर्वक सम्पन्न हुईं. गाँव में किसी की मृत्यु होने पर बहुत कम लोग अंतिम संस्कार में शामिल हुवे. ज्यादातर परिवारों ने लॉकडाउन के नियमों का स्वयं पालन किया. (गाँव में सामाजिक काम-काज रुक गये- 35 प्रपत्र, सीमित संख्या में लोग शामिल हुवे-37 प्रपत्र)
   - **"अब ज्यादातर लोग शुभ-अशुभ कामकाजों में जाने से घबरा रहे हैं" (नामिक, बागेश्वर).** "गाँव में होने वाले भागवत भी रुक गये"(गोगिना)
   - "गाँव में सामाजिक प्रभाव बहुत ज्यादा दिखा. लगभग 6 शादियाँ रुक गयी हैं..." (कफलोड़ी) तथा **"गाँव में जो भी सामाजिक समारोह हुए उनमें परिवारों को आर्थिक लाभ देखने को मिला" (चौण्डली). "शादी में अब वह रौनक नहीं रही" (कुकड़ई).**
   - **शादियाँ धूम-धड़ाके से नहीं हुईं (डसीली, दन्या)**

- गाँव के लोगों ने शादियाँ दिसम्बर में करने का फ़ैसला लिया है (खोला, मैचून)
- **माँ भगवती अनुसूया का यज्ञ रुक गया ((मण्डल, चमोली)**
- एक बच्चे का मुंडन हुआ था लेकिन उसके **परिवार के अलावा अन्य कोई शामिल नहीं हुआ (ग्वाड़, चमोली).**
- गाँव में तीन शादियाँ हुईं जिनमें 10 लोग हेई शामिल हुए (तोली, पाटी)

9. **शिक्षण- केन्द्र बंद होने का प्रभाव:** बच्चों पर बहुत ज्यादा प्रभाव पड़ने का उल्लेख 41 प्रपत्रों में, महिलाओं पर तथा किशोरियों पर बहुत ज्यादा प्रभाव का उल्लेख क्रमशः 12 और 15 प्रपत्रों में है. स्कूल भी बंद होने के कारण बच्चे पढ़ने-लिखने, खेल-कूद आदि की गतिविधियों के अभाव में इधर-उधर घूमते हैं और घर के भीतर/बाहर शरारतें करते हैं जिनसे अभिभावक भी परेशान हैं. कुछ ने उल्लेख किया है कि बच्चों के घर पर होने के कारण महिलायें परेशान हैं
   - शामा, बागेश्वर: **"बच्चे घरों में कैद हो गये हैं जिस कारण उनके ऊपर मानसिक तनाव हावी हो रहा है..." (नामिक). "ग्रामीण क्षेत्र होने के कारण बच्चे ऑनलाइन पढ़ाई नहीं कर पाए और केन्द्र बंद होने के बाद उनकी पूरी पढ़ाई रुक गयी" (मलखा दुगर्चा)**
   - कर्णप्रयाग, चमोली: **"स्कूल बंद होने के कारण पढ़ाई करने का अच्छा साधन शिक्षण केन्द्र था जहाँ आकर बच्चे अपनी अधूरी पढ़ाई पूरी कर रहे थे"** (कुकड़ई). "भटकाव की स्थिति देखि गयी" (चौण्डली).
   - गणाई, पिथौरागढ़: **"बच्चे तो ज्यादा मतलब नहीं रख रहे लेकिन उनसे महिलाएं बहुत परेशान हैं" (भालूगाड़ा).**
   - गोपेश्वर, चमोली: "शिक्षण केन्द्र बंद होने के कारण बच्चे आपस में लड़ने लगे, पेड़ों पर चढ़ने लगे और गाँव में इधर-उधर भागने लगे" (मण्डल)
10. **लॉकडाउन अवधि में क्या किया:** जो शिक्षिकाएं/मार्गदर्शिकाएं कॉलेज में पढ़ रही हैं उन्होंने ऑनलाइन पढ़ाई(11 प्रपत्र) के साथ-साथ **घर का काम किया (33 प्रपत्र)**, सिलाई/बुनाई/कढ़ाई जैसे काम किये और शिक्षण केन्द्र की किताबें पढ़ीं.

    बाहर से आये प्रवासियों और गाँव में रहने वाले महिला-पुरुषों ने **ज्यादातर खेतीबाड़ी का काम किया (54 प्रपत्रों में उल्लेख)** और अपने घर की मरम्मत (10 प्रपत्र) गाँव के रास्ते साफ़ करने, कुरी की झाड़ियाँ काटने जैसे काम (8 प्रपत्र) किये.
11. **सरकार द्वारा प्रदान की गयी सहायता:**

    **अन्त्योदय/बीपीएल परिवारों को** प्रति यूनिट 5 किलो चावल और 1 किलो अरहर/चना/मसूर की दाल प्रतिमाह के हिसाब से तीन महीने का राशन मुफ़्त मिला. **उज्ज्वला योजना** के अंतर्गत 3 माह तक 1 एलपीजी गैस सिलैंडर मुफ्त दिया गया. **एपीएल परिवारों को** प्रति कार्ड 15 किलो चावल और 10 किलो गेहूँ दिया गया.

**महिला जनधन खाताधारकों** के खाते में 500 रु. मासिक के हिसाब से 3 महीने के 1500 रु. जमा किये गये. श्रम विभाग द्वारा **श्रमिकों के खाते** में प्रति परिवार 2000 रु जमा किया गये हैं.

इसके अलावा पटवारी/ग्राम प्रधान द्वारा भी कहीं-कहीं ज़रूरतमंद परिवारों को कपड़े के मास्क, राशन, साबुन, तेल आदि दिया गया. कर्णप्रयाग में 'गूँज' संस्था द्वारा ज़रूरतमंद परिवारों को राशन किट (5 किलो चावल, 5 किलो आटा, साबुन, मसाले आदि) दिये गये. गोगिना-नामिक क्षेत्र में भी एक संस्था 'सज्जनलाल मेमोरियल सोसाइटी बुगाछिना द्वारा ज़रूरतमंद परिवारों को 15 किलो/परिवार तथा 'मुनस्यारी महोत्सव के कार्यकर्ताओं द्वारा 10 किलो/परिवार राशन दिया गया. स्थानीय विधायक द्वारा भी 15 किलो राशन/परिवार वितरित किया गया.

उपरोक्त के अलावा पहले से दी जा रही सहायता- किसान सम्मान निधि (4 माह के रु 2000/-), विधवा/वृद्धावस्था/दिव्यांग पेंशन (3 माह के रु 3600/-). कहीं पर पटवारी/ ग्राम प्रधान द्वारा विधवाओं को राशन दिया गया, ग्रामीण परिवारों को मास्क, सेनीटाइज़र दिये गये.

**लोगों की राय:** आम तौर पर सभी क्षेत्रों में लोग सरकार द्वारा दी गयी सहायता से पूर्णतःसंतुष्ट और खुश हैं (51 प्रपत्र). खासकर लॉकडाउन अवधि में राशन की कमी की कोई शिकायत नहीं बतायी गयी. कुछ टिप्पणियाँ:

- पाटी, चम्पावत: "मोदी की वाहवाही करते हैं" (तोली), "ज्यादातर खुश हैं" (रौलमेल), "मोदी सरकार ने राशन दियादिया और गरीबों की बहुत सहायता की" (मल्ला कमलेख, चम्पावत), "सरकार द्वारा प्रदान की गयी राहत से खाने-पीने का अभाव नहीं पड़ा. राशन पर्याप्त मात्र में प्राप्त हुआ" (लखनपुर).
- शामा, बागेश्वर): "लोग सोचते हैं कि महामारी के समय में सरकार ने उनको खाने-पीने का सामान दिया" (मल्ला धारी, गोगिना). "लोगों का मानना है कि सरकार द्वारा प्रदान की गयी राहत वास्तव में बहुत अच्छी है."
- कर्णप्रयाग, चमोली: **"सरकार द्वारा प्रदान की गयी राहत से लोगों को बहुत मदद मिली. राशन सही समय पर पूर्ण रूप से मिली तथा पिछले समय से कुछ ज्यादा मिली" (कफलोडी).** "अगर सरकार न देती तो हम भूखे ही रहते" (सुनारग्वाड़).
- दन्या, अल्मोड़ा: "लोग सोचते हैं कि सरकार हमारी सुरक्षा के लिये ही हमें घर में ही रह कर इतनी सुविधा दे रही है जिसका **धन्यवाद अदा करते हैं" (गौली).**

- मैचून, अल्मोड़ा): **"लोग सोचते हैं कि इस महामारी के समय में बेरोजगार हुए लोगों को सरकार द्वारा मदद करना अच्छी बात है" (खोला).** "यह सरकार का एक अच्छा क़दम है" (मौनी).
- गणाई गंगोली, पिथौरागढ़: "**लोगों की सोच सरकार के प्रति सकारात्मक रही" (भालूगाड़ा)**
- गोपेश्वर,/दशौली चमोली: "लोग सरकार द्वारा दी गयी राहत के लिये आभार व्यक्त करते हैं" (मण्डल), "लोगों का कहना है कि सरकार ने इस बार गरीबों और मजदूरों का भी ध्यान रखा, किसी को राशन, किसी के खाते में पैसे" (खल्ला)

केवल 4 प्रपत्रों में संतुष्ट नहीं होने का उल्लेख है. "कई लोगों का कहना था कि राशन केवल ज़रूरतमंद लोगों को ही मिलना चाहिये." (भन्यानी, गणाई ) नामिक में लोग "सरकार को धन्यवाद देते हैं" लेकिन उनकी अपेक्षा है कि **सरकार को गाँव लौटकर आये प्रवासियों के लिये रोजगार की व्यवस्था करनी चाहिये.**" "पहाड़ों में तो खेती-बाड़ी करके परिवार का गुजारा हो जाता है, जो भूख से मर रहे हैं उन्हें यह राहत मिलनी चाहिये." (गोगिना) "गाँव में अपनी खेतीबाड़ी से कमाए अनाज से भरण-पोषण कर सकते हैं. जो राहत गाँव में दे रहे हैं उसे **रोजगार के बिना शहर में फंसे उ**

**नके बच्चों को दें." (खल्ला). "राहत के साथ सरकार द्वारा यदि आगे रोजगार के अवसर भी दिये जाते हैं तो उससे उन्हें काम के बदले पैसे मिलेंगे और खाली नहीं बैठे रहेंगे" (दोगडी कांडई).** " जो बीपीएल परिवार के लोग हैं उन्हें राहत मिली जो अन्य हैं उनको क्यों नहीं? यह गांववालों के साथ भेदभाव है क्योंकि लॉकडाउन तो सभी को है" (बमियाला)

**"अगर सरकार द्वारा गाँवों में अच्छी नीतियाँ बनाई जाती हैं तो भविष्य में लोग स्वयं पर निर्भर रहेंगे" (सरोली, गोपेश्वर)**

12. **संस्था कार्यकर्त्ता के तौर पर आप क्या सहयोग कर सकते हैं**?: COVID19 के बारे में जागरूकता- मास्क/पोस्टर गांवों में पहुँचाना, प्रवासियों के आने से उत्पन्न भय-संशय दूर कर सामाजिक माहौल सुधारने में सहयोग का उल्लेख 50 प्रपत्रों में है. 14 प्रपत्रों में मास्क बनाना/वितरण करने की तथा 4 में गाँव की सफाई का उल्लेख है. संस्था कार्यकर्ताओं द्वारा घर-घर जाकर शिक्षण केन्द्र की किताबें पढ़ने को दी गयीं.

**निष्कर्ष:**

1. खेतीबाड़ी पर ख़राब असर नहीं दिखा, बल्कि एक सकारात्मक प्रभाव यह दिखा कि लॉकडाउन अवधि में गाँव के लोगों और प्रवासियों, दोनों ने खेतीबाड़ी की तरफ़ ज्यादा ध्यान दिया. लेकिन गाँव में रह कर आसपास कस्बों/शहरों में अन्य व्यवसाय- दुकान, टैक्सी आदि करने वालों तथा गाँव के बाहर रोजगार कर रहे प्रवासी बहुत प्रभावित हुए.

2. आवश्यक वस्तुओं/सेवाओं की उपलब्धता में राशन (अन्न) की कमी कहीं हुई. अन्य चीजों की भी गंभीर समस्या नहीं आयी. यातायात के साधन उपलब्ध न होने का असर सबसे ज्यादा हुआ जो रोज़मर्रा की चीजें बाज़ार से खरीदकर लाने, बीमारों को अस्पताल ले जाने या गाँव में उत्पादित सब्जी, दूध, फल को बेचने में बाधक बना. इसके अलावा कर्णप्रयाग के प्रपत्रों में भवन निर्माण सामग्री न मिलने से निर्माण कार्य प्रभावित होने का ज़िक्र है.
3. स्कूल और ग्राम शिक्षण केन्द्र बंद होने का बच्चों की पढ़ाई-लिखाई और रुचिकर कामों में व्यस्तता पर बहुत असर हुआ.
4. शराब जितने दिन उपलब्ध नहीं हुई उतने दिन गाँवों का पारिवारिक/सामाजिक माहौल अच्छा/शांत रहा लेकिन शराब की बिक्री बहाल होते ही पुरानी स्थिति आ गयी.
5. शुभ कामकाज ज्यादातर स्थगित हुए और जो हुए उनमें सादगी रही. अशुभ कामों में भी सरकार के निर्देशों का पालन किया.
6. सरकार द्वारा प्रदान की गयी राहत से प्रायः सभी गाँव में लोग बहुत संतुष्ट और खुश दिखे.

***

कोविड–19 के कारण लागू लाकडाउन के आपको अपने गांव/कार्यक्षेत्र के गांवों में क्या प्रभाव दिखे :–

प्रपत्र भरने वाले कार्यकर्ता का नाम : मोबाइल नंबर

गांव का नाम (जिसकी जानकारी भरी गयी है) : विकास खण्ड

---

1. सबसे ज्यादा असर क्या दिखा और किन लोगों पर :

2. गांव में रहने वाले परिवारों की आय पर प्रभाव : जो लागू हो उस पर सही का निशान लगाइये। (आय का साधन, जैसे– बाहर रोजगार करने वाले सदस्यों द्वारा भेजे गये रुपये, खेती, पशुपालन/डेयरी, दुकान, टैक्सी आदि)

| आय का साधन (गांव में आय के मुख्य साधन को सबसे पहले लिखिये | बहुत ज्यादा असर | थोड़ा बहुत असर | बिल्कुल असर नहीं |
|---|---|---|---|
| | | | |
| | | | |
| | | | |

3. इस अवधि में बेरोजगार हुए लोगों ने क्या किया :

4. खाने–पीने की चीज़ों/ज़रूरी सेवाओं की उपलब्धता पर असर तथा क्या हल निकाला–

| सामग्री | बहुत ज्यादा असर | थोड़ा बहुत असर | बिल्कुल असर नहीं |
|---|---|---|---|
| अनाज | | | |
| सब्जी | | | |
| रसोई गैस | | | |
| स्वास्थ्य/चिकित्सा/दवाइयां | | | |
| अन्य (नाम लिखें)– | | | |

क्या हल निकाला :

5. शराब की आपूर्ति / उपलब्धता तथा इससे गांव के सामाजिक माहौल पर कोई उल्लेखनीय असरः

6. गांव में होने वाले उत्पादन को बेचने में कठिनाइयां तथा क्या हल निकाला :

| सामग्री | बहुत ज्यादा असर | थोड़ा बहुत असर | बिल्कुल असर नहीं |
|---|---|---|---|
| सब्जी | | | |
| दूध | | | |
| अन्य | | | |

क्या हल निकाला :

7. लाकडाउन शुरू होने के बाद बाहर गये कितने लोग अपने गांव में वापस आये–

कितने गांव में ही रह रहे हैं –

कितने वापस जा रहे हैं–

वे क्या–क्या काम करते थे–

इनमें से ज्यादातर अपने भविष्य के बारे में क्या सोच रहे हैं:

8. गांव में सामाजिक प्रभाव (शादी–बारात, शुभ–अशुभ कामकाज):

9. ग्राम शिक्षण केन्द्र बन्द होने का असर :

| | बहुत ज्यादा असर | थोड़ा बहुत असर | बिल्कुल असर नहीं |
|---|---|---|---|
| बच्चों पर | | | |
| महिलाओं पर | | | |
| किशोरियों पर | | | |

उदाहरण :

10. लाकडाउन अवधि में गांवों में लोगों ने खाली समय का उपयोग कैसे किया :

– स्वयं आपने :

– जो लोग बाहर से गांव आये :

– जो गांव ही में रह रहे थे – महिलायें तथा पुरुष

11. सरकार द्वारा प्रदान की गयी राहत :

– प्रति परिवार कितना राशन मिला है:

– नकद धनराशि कितनी मिली :

जनधन खाता :

किसान सम्मान निधि :

विधवा पेन्शन :

दिव्यांग पेन्शन :

वृद्धावस्था पेन्शन :

अन्य सहायता :

सरकार द्वारा प्रदान की गयी राहत के बारे में लोग क्या सोचते हैं :

12. संस्था कार्यकर्ता के तौर पर आप इसमें क्या सहयोग कर सकते हैं:

---

इस प्रपत्र की जानकारियां आपने किस आधार पर भरी हैं –

| | | | |
|---|---|---|---|
| गांव के लोगों से बातचीत | गांव की दशा देख–सुनकर | अपने अनुमान के आधार पर | अन्य– |

दिनांक –

प्रपत्र भरने वाले व्यक्ति के हस्ताक्षर

## COVID19 effects: Main findings about migrants

**Based on a survey conducted by USNPSS in September 2020**

- Total number of the migrants who returned to their villages after the lockdown is 2,016 which is 8.7% (average) of the population (23,130) of these 50 villages. The percentage varies in different villages and areas.

- By September 2020, 34.7% of these migrants had returned to the cities. Most of the remaining people wanted to go back to the cities as and when the situation improves. Only 17.9% were eager to live permanently in their villages. The percentage varies in different villages and areas. Essentially just a few want to live in the village.

- Apart from a few, all the migrants were working as daily wage earners (mainly under MNREGA) and doing agricultural work. Most of them were doing these tasks in compulsion and were neither happy nor satisfied with their work. Many young people were reluctant to work as daily wage earners and were not doing any work. A few of these migrants were working in local shops and restaurants.

- There are a few examples in which someone did poultry, started a shop. Apart from these, one person has started a Common Service Centre and two young men have opened a barber shop and they are making good money.

Employment is the biggest issue and a big cause of tension for the migrants who have returned to the villages due to the lockdown. As a man from Pati (Champawat) said, *"कोरोना हो या न हो, रोजगार होना ज़रूरी है"* (Doesn't matter whether Corona remains or not, employment is necessary). In other villages the migrants who were self-employed, such as shopkeepers, iron smiths, carpenters said that if they do not get success in this work then they will be forced to flee again.

- In some cases, due to the arrival of the migrants in villages, 2-3 families have to live together in small houses.

- Like elsewhere, children's education has been affected badly and people are worried.

- People are travelling less due to fear of the virus and increase in bus/taxi fares (fewer passengers are allowed in a bus/taxi to keep physical distancing). Also, people are avoiding extravagant expenditure (e.g. a cake for birthday celebration).

Some other affects have also been reported: The growing interest in local agriculture, vegetable production etc to increase self-sufficiency rather than buying from the market can be seen as a positive trend. People are also paying attention to cleanliness and hygiene.

Kamal Joshi

# Effects of COVID-19 Lockdown (September 2020)

| Sl. | Village | Population | No. of migrants came after the lockdown | % of B | No. of migrants returned to the cities | % of C | No. of migrants staying in the village at present | % of C | No. of migrants planning to stay in the village in future | % of C | Work/ sources of income |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | A | B | C | D | E | F | G | H | I | J | K |
| | BADHANI, KARNPRAYAG, DIST. CHAMOLI | 5200 | 404 | 7.8 | 193 | 47.8 | 211 | 52.2 | 27 | 6.7 | |
| 1 | Sunargwar | 348 | 33 | 9 | 12 | 36 | 21 | 64 | 5 | 15 | Agriculture, daily wages |
| 2 | Bainoli | 1352 | 103 | 8 | 80 | 78 | 23 | 22 | 0 | 0 | agriculture, daily wages, animal husbandry |
| 3 | Kaflodi | 400 | 45 | 11 | 6 | 13 | 39 | 87 | 5 | 11 | daily wages |
| 4 | Chaundali | 530 | 40 | 8 | 11 | 27 | 29 | 73 | 6 | 15 | Daily wages, dairy, agriculture |
| 5 | Sundargaon | 209 | 22 | 11 | 9 | 41 | 13 | 59 | 0 | 0 | Daily wages,, agriculture |
| 6 | Jakh | 820 | 31 | 4 | 28 | 90 | 3 | 10 | 0 | 0 | Daily wages,, agriculture |
| 7 | Kukdaee | 350 | 20 | 6 | 5 | 25 | 15 | 75 | 0 | 0 | Daily wages,, horticulture |
| 8 | Pudiyani | 478 | 75 | 16 | 22 | 29 | 53 | 71 | 8 | 2 | Daily wages, |
| 9 | Chhatoli | 398 | 24 | 6 | 12 | 50 | 12 | 50 | 3 | 12 | Daily wages, horticulture in barren land |
| 10 | Badhani | 315 | 11 | 3 | 8 | 73 | 3 | 17 | 0 | 0 | Agriculture, daily wages |
| | GOPESHWAR, DIST. CHAMOLI | 5604 | 233 | 4.1 | 72 | 30.9 | 161 | 69.1 | 37 | 15.9 | |
| 11 | Banadwara | 395 | 25 | 6 | 15 | 60 | 10 | 40 | 5 | 20 | Daily wages, collecting material for house construction |
| 12 | Bamiyala | 365 | 26 | 7 | 16 | 62 | 10 | 38 | 10 | | Agriculture, poultry |
| 13 | Devaldhar | 1115 | 60 | 5 | 5 | 8 | 55 | 92 | 2 | 3 | Daily wages, self- employment |
| 14 | Gwar | 900 | 18 | 2 | 3 | 17 | 15 | 83 | 4 | 22 | poultry, work in shop/restaurant |
| 15 | Kandai | 230 | 14 | 6 | 2 | 14 | 12 | 86 | 12 | 86 | Daily wages, making poly-houses, dairy |

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 16 | Kathoor | 272 | 4 | 1 | 2 | 50 | 2 | 50 | 0 | 0 | Daily wages, |
| 17 | Khalla | 650 | 30 | 5 | 2 | 7 | 28 | 93 | 4 | 13 | Daily wages, some educated youth are taking tuitions |
| 18 | Mandal | 610 | 18 | 3 | 1 | 6 | 17 | 94 | 10 | 56 | Some are doing daily wages some are doing nothing and sitting idle |
| 19 | Koteshwar | 267 | 10 | 4 | 6 | 60 | 4 | 40 | 3 (1 family) | 30 | Agriculture, animal husbandry |
| 20 | Siroli | 800 | 28 | 3 | 20 | 71 | 8 | 29 | 0 | 0 | Agriculture |
| | MAICHUN, DIST. ALMORA | 2414 | 273 | 11.3 | 52 | 19 | 221 | 81 | 40 | 14.6 | |
| 21 | Palyoun | 692 | 58 | 8 | 4 | 7 | 54 | 93 | 8 | | Daily wages, work in local restaurant |
| 22 | Maniagar | 900 | 150 | 17 | 30 | 20 | 120 | 80 | 17 | | Daily wages, agriculture |
| 23 | Kasoon | 327 | 20 | 6 | 4 | 20 | 16 | 80 | 12 | | Daily wages, agriculture, domestic works |
| 24 | Mauni | 215 | 30 | 14 | 10 | 33 | 20 | 67 | 0 | | Daily wages,, agriculture |
| 25 | Banthok | 280 | 15 | 5 | 4 | 27 | 11 | 83 | 3 | | Daily wages, vegetable production |
| | PATI, DIST. CHAMPAWAT | 4323 | 310 | 7.1 | 243 | 78.4 | 67 | 21.6 | 18 | 5.8 | |
| 26 | Garsari | 276 | 50 | 18 | 40 | 80 | 10 | 20 | 2 | 4 | Daily wages, agriculture, vegetable, shop (2 persons) |
| 27 | Goom | 167 | 40 | 24 | 30 | 75 | 10 | 25 | 1 | 2 | Daily wages, agriculture, vegetable, shop (1 person) |
| 28 | Jairoli | 120 | 21 | 17 | 15 | 71 | 6 | 29 | 0 | 0 | Daily wages, agriculture |
| 29 | Bisari | 170 | 15 | 9 | 11 | 73 | 4 | 27 | 2 | 13 | Daily wages, agriculture, animal husbandry |
| 30 | Bhatyura | 115 | 12 | 10 | 12 | 100 | 0 | 0 | 0 | 0 | Daily wages |
| 31 | Lakhanpur | 100 | 18 | 18 | 13 | 72 | 5 | 28 | 1 | 6 | Daily wages, agriculture |
| 32 | Raulmel | 320 | 24 | 7 | 20 | 83 | 4 | 17 | 2 | 8 | Daily wages, fishery, shop (1) |
| 33 | Kamlekh | 650 | 30 | 7 | 24 | 80 | 6 | 20 | 2 | 7 | Daily wages, agriculture |
| 34 | Jankande | 1200 | 50 | 4 | 40 | 80 | 10 | 20 | 4 | 8 | Daily wages, agriculture, shop (2) |
| 35 | Maragaon | 200 | 8 | 4 | 6 | | 2 | 25 | 0 | 0 | Daily wages, agriculture, horticulture |
| 36 | Ladhaun | 250 | 10 | 4 | 8 | 80 | 2 | 20 | 2 | 20 | Daily wages, agriculture, carpentry (1), |

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | | | | | iron smith (1) |
| 37 | Katwalgaon | 125 | 9 | 7 | 8 | 88 | 1 | 11 | 0 | 0 | Daily wages, agriculture |
| 38 | Dhoonaghat | 350 | 15 | 4 | 12 | 80 | 3 | 20 | 2 | 13 | Daily wages, agriculture |
| 39 | Toli | 280 | 8 | 3 | 4 | 50 | 4 | 50 | 0 | 0 | Daily wages, agriculture |
| | DANYA, DIST. ALMORA | 2832 | 270 | 9.5 | 69 | 25.6 | 201 | 74.4 | 12 | 4.4 | |
| 40 | Gauli | 235 | 21 | 9 | 1 | 5 | 20 | 95 | 0 | 0 | Daily wages, agriculture, cutting grass for fodder |
| 41 | Munauli | 192 | 16 | 8 | 2 | 12 | 14 | 88 | 8 | 50 | Daily wages, agriculture, one man has started a CSC (common service centre) |
| 42 | Takoli | 192 | 40 | 21 | 10 | 25 | 30 | 75 | 0 | 0 | Agriculture (ploughing, sowing seeds), cutting grass |
| 43 | Dasili | 1595 | 125 | 8 | 40 | 32 | 85 | 68 | - | 68 | Agriculture, daily wages |
| 44 | Dharagad | 80 | 19 | 24 | 0 | 0 | 19 | 100 | - | - | Daily wages, agriculture |
| 45 | Basaan | 183 | 18 | 10 | 3 | 17 | 15 | 83 | 4 | 22 | Agriculture, daily wages |
| 46 | Danya | 234 | 16 | 7 | 1 | 6 | 15 | 94 | 0 | 0 | Daily wages, agriculture, grass cutting |
| 47 | Kotyura | 121 | 15 | 12 | 12 | 80 | 3 | 20 | 0 | 0 | Agriculture, grass cutting |
| | GOGINA-NAMIK, DIST. BAGESHWAR | 2757 | 526 | 19 | 71 | 13.5 | 455 | 85.5 | 214 | 40.6 | |
| 48 | Ratir (Malkha Dugarcha VP) | 714 | 252 | 35 | 32 | 13 | 220 | 87 | 95 | 38 | Daily wages, agriculture |
| 49 | Gogina VP | 1400 | 190 | 14 | 28 | 15 | 162 | 85 | 70 | 37 | Daily wages, agriculture, shop |
| 50 | Namik VP | 643 | 84 | 13 | 11 | 13 | 73 | 87 | 49 | 58 | Agriculture, MNREGA |
| | TOTAL (50 VILLAGES) | 23,130 | 2,016 | 8.7 | 700 | 34.7 | 1,316 | 65.3 | 361 | 17.9 | |

**Migrants returned to villages after the COVID19 lockdown**

(Survey: January 2021)

| Village/cluster | Population | Total migrants (% of village population) | Migrants: number of men, women and children and percentage of the total migrants | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | Men | % | Women | % | Children | % |
| **Karnprayag, Chamoli** | **5200** | **417(8 )** | **303** | **72.6** | **53** | **12.7** | **61** | **14.6** |
| Sunargwar | 348 | 33 (9.4) | 17 | 52 | 8 | 24.2 | 8 | 24.2 |
| Bainoli | 1352 | 103 (7.6) | 70 | 67.9 | 12 | 11.6 | 21 | 20.3 |
| Kaflodi | 400 | 45 (11.2) | 34 | 75.5 | 5 | 11.1 | 6 | 13.3 |
| Chaundali | 530 | 40 (7.5) | 28 | 70 | 5 | 12.5 | 7 | 17.5 |
| Sundargaon | 209 | 32 (15.3) | 28 | 87.5 | 2 | 6.2 | 2 | 6.2 |
| Jakh | 820 | 31 (3.7) | 21 | 67.7 | 5 | 16.1 | 5 | 16.1 |
| Kukdaee | 350 | 25 (7.1) | 23 | 92 | 1 | 4 | 1 | 4 |
| Pudiyani | 478 | 75 (15.6) | 55 | 73.3 | 12 | 16 | 8 | 10.6 |
| Chhatoli | 398 | 22 (5.5) | 19 | 86.3 | 2 | 9 | 1 | 4.5 |
| Badhani | 315 | 11 (3.4) | 8 | 72.7 | 1 | 9 | 2 | 18.1 |
| **GOPESHWAR, Chamoli** | **5604** | **269 (4.8)** | **172** | **63.9** | **45** | **16.7** | **52** | **19.3** |
| Banadwara | 395 | 34 (8.6) | 15 | 44.1 | 10 | 29.4 | 9 | 26.4 |
| Bamiyala | 365 | 40 (10.9) | 24 | 60 | 7 | 17.5 | 9 | 22.5 |
| Devaldhar | 1115 | 60 (5.3) | 54 | 90 | 2 | 3.3 | 4 | 6.6 |
| Gwar | 900 | 24 (2.6) | 17 | 70.8 | 1 | 4.1 | 6 | 25 |
| Kandai | 230 | 14 (6) | 11 | 78.5 | 1 | 7.1 | 2 | 14.2 |
| Kathoor | 272 | 8 (2.9) | 2 | 25 | 2 | 25 | 4 | 50 |
| Khalla | 650 | 30 (4.6) | 12 | 40 | 10 | 33.3 | 8 | 26.6 |
| Mandal | 610 | 19 (3.1) | 12 | 63.1 | 4 | 21 | 3 | 15.7 |
| Koteshwar | 267 | 10 (3.7) | 6 | 60 | 2 | 20 | 2 | 20 |
| Siroli | 800 | 30 (3.7) | 19 | 63.3 | 6 | 20 | 5 | 16.6 |
| **MAICHUN, ALMORA** | **2414** | **281 (11.6)** | **167** | **59.4** | **53** | **18.8** | **61** | **21.7** |
| Palyoun | 692 | 58 (8.3) | 31 | 53.4 | 11 | 18.9 | 16 | 27.5 |
| Maniagar | 900 | 150 (16.6) | 91 | 60.6 | 30 | 20 | 29 | 19.3 |
| Kasoon | 327 | 28 (8.5) | 16 | 57.1 | 4 | 14.2 | 8 | 28.5 |
| Mauni | 215 | 30 (13.9) | 19 | 63.3 | 4 | 13.3 | 7 | 23.3 |
| Banthok | 280 | 15 (5.3) | 10 | 66.6 | 4 | 26.6 | 1 | 6.6 |
| **PATI, CHAMPAWAT** | **4323** | **310 (7.1)** | **216** | **69.6** | **60** | **19.3** | **34** | **10.9** |
| Garsari | 276 | 50 (18.1) | 36 | 72 | 10 | 20 | 4 | 8 |
| Goom | 167 | 40 (23.9) | 32 | 80 | 4 | 10 | 4 | 10 |
| Jairoli | 120 | 21 (17.5) | 16 | 76.1 | 2 | 9.5 | 3 | 14.2 |
| Bisari | 170 | 15 (8.8) | 10 | 66.6 | 2 | 13.3 | 3 | 20 |
| Bhatyura | 115 | 12 (10.4) | 12 | 100 | 0 | 0 | 0 | 0 |
| Lakhanpur | 100 | 18 (5.6) | 16 | 88.8 | 2 | 11.1 | 0 | 0 |

| | Village population | Total migrants (% of village population | Men | % | Women | % | Children | % |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| Raulmel | 320 | 24 (7.5) | 18 | 75 | 4 | 16.6 | 2 | 8.3 |
| Kamlekh | 650 | 30 (4.6) | 12 | 40 | 10 | 33.3 | 8 | 26.6 |
| Jankande | 1200 | 50 (4.1) | 32 | 64 | 14 | 28 | 4 | 8 |
| Maragaon | 200 | 8 (4) | 6 | 75 | 2 | 25 | 0 | 0 |
| Ladhaun | 250 | 10 (4) | 6 | 60 | 2 | 20 | 2 | 20 |
| Katwalgaon | 125 | 9 (7.2) | 8 | 88.8 | 1 | 11.1 | 0 | 0 |
| Dhoonaghat | 350 | 15 (4.2) | 8 | 53.3 | 5 | 33.3 | 2 | 13.3 |
| Toli | 280 | 8 (2.8) | 4 | 50 | 2 | 25 | 2 | 25 |
| **SHAMA: Gogina-NAMIK** | **2757** | **519 (18.8)** | **296** | **57** | **78** | **15** | **145** | **27.9** |
| Ratir (Malkha Dugarcha VP) | 714 | 235 (32.9) | 125 | 53.1 | 37 | 15.7 | 73 | 31 |
| Gogina VP | 1400 | 186 (13.2) | 104 | 55.9 | 28 | 15 | 54 | 29 |
| Namik VP | 643 | 98 (15.2) | 67 | 68.3 | 13 | 13.2 | 18 | 18.3 |
| **Ganai Gangoli** | **3837** | **224 (5.8)** | **160** | **71.4** | **29** | **12.9** | **35** | **15.6** |
| Gwadi | 615 | 26 (4.2) | 20 | 76.9 | 4 | 15.3 | 2 | 7.6 |
| Rugadi | 736 | 30 (4) | 19 | 63.3 | 5 | 16.6 | 6 | 20 |
| Fadiyali | 348 | 23 (6.6) | 17 | 73.9 | 2 | 8.6 | 4 | 17.3 |
| Bhanyani | 615 | 35 (5.6) | 28 | 80 | 3 | 8.5 | 4 | 11.4 |
| Kakada | 247 | 8 (3.2) | 6 | 75 | 1 | 12.5 | 1 | 12.5 |
| Bhaloogada/Nayal | 300 | 24 (8) | 14 | 58.3 | 4 | 16.6 | 6 | 25 |
| Kimtola | 210 | 14 (6.6) | 10 | 71.4 | 1 | 7.1 | 3 | 21.4 |
| Chaunaliya/Kunalta | 224 | 30 (13.3) | 22 | 73.3 | 4 | 13.3 | 4 | 13.3 |
| Dhigarkoli | 332 | 17 (5.1) | 14 | 82 | 2 | 11.7 | 1 | 5.8 |
| Bhatgada | 210 | 17 (8) | 10 | 58.8 | 3 | 17.6 | 4 | 23.5 |
| Total (52 villages) | **24135** | **2020 (8.5)** | **1314** | **65** | **318** | **15.7** | **388** | **19.2** |

Reported number of persons infected by COVID 19 : 21 (see table below).

Reported cases of COVID 19 deaths : Nil

| Category | Men | Women | Children | Areas/cluster |
|---|---|---|---|---|
| Migrants who returned to villages after the lockdown | 3 | 3 | 0 | Pati (2 men nad 2 women), Karnprayag (1), Maichun (1 women) |
| Local villagers | 11 | 1 | 3 | Gopeshwar (5 men and 2 women), Karnprayag (6 men), Pati (1 woman), Maichun (1 woman) |
| Total | 14 | 4 | 3 | |

**Effects of the second wave of COVID-19 pandemic in hill villages of Uttarakhand**


***Summary***

This study was conducted with the aim of understanding effects of the second wave of COVID-19 pandemic in hill villages of Uttarakhand. This note includes information on a total of 44 villages/*toks* located in Almora, Bageshwar, Chamoli, Champawat and Pithoragarh districts of the state. The questionnaire prepared for this study has been filled by the village workers of our partner NGOs/CBOs and the *shikshikas* of village learning centres on the basis of discussions with 1101 people (579 women and 522 men) during April to June 2021.

The main points that emerged from this study are as follows:

- Total number of confirmed cases of the virus infection is 276, out of which 5 people died. During the first wave only 21 people were infected and no one died.
- Most of the people (86%) became healthy by staying at home. Both domestic and allopathic medicines were consumed by them. Only 14% of the infected persons were hospitalized.
- Confirmed cases of the virus infection have been reported in 66% villages. Only 18% of the villages had cases of infection during the first wave.
- The actual number of people and villages infected during the second wave of COVID-19 infection is expected to be higher than the confirmed/certified number as many symptomatic patients in the villages couldn't go for the test due to lack of testing facilities in remote villages and for other reasons. Therefore, the virus-infection could not be confirmed.
- 63% of the people infected with the virus are men and 37% are women.
- Out of the total 5 people dead, 4 were male while 1 was female. 4 people who died were in the age group of 46-62 years; one person was 84 years old. 4

people died in the hospital, while one person died after coming home from the hospital.

- The highest (44%) infected persons were in the age-group of 36-59 and the lowest (8.3%) in the age-group below 18 years.
- Of the total infected, 86% people were living in villages and 14% were migrants who returned home during the second wave.
- The total number of migrants who returned to villages during the second wave of COVID19 infection was 519, which is about one-third of the number of migrants returned during the first wave.
- 49% of the migrants who returned during the second wave were living in Uttarakhand. Of these, 13% were living in their own district and 36% in other districts of Uttarakhand. 51% were living in other states outside Uttarakhand. Most of the migrants were employed in private companies, hotels/restaurants, shops etc.
- 79% of adult migrants are male and 21% female. Only 7% of adult migrant women were employed, others were working as homemakers.
- The worst effect of the second wave of the COVID-19 was unemployment of the returnee migrants. Their families were unable to buy daily necessities. Such families received free ration from the government but purchasing other commodities such as oil, spices, sugar, tea, soap, tooth-paste etc posed problems.
- Disruption of children's education, fear of illness and death due to virus infection were also reported as serious effects.
- Due to the extreme fear of the virus, people stopped meeting acquaintances/relatives not only in neighboring villages, but also within their own village. Most of the socio-religious events were cancelled or postponed and

other events were carried out with simplicity. As per the COVID19 guidelines issued by the government a limited number of people attended.

- Agriculture, dairying, vegetable production are reported to be the least affected occupations. In some villages there was a problem selling milk, vegetables etc. but it did not have much effect.
- Most of the migrants wanted to return to their work place as soon as the situation improved, mainly due to non-availability of employment in the villages.
- Keeping in view the insufficient agricultural land and the problems arising due to wild animals, climate change etc. the village residents wanted to diversify their livelihoods.
- Most of the people liked the restrictions and guidelines issued by the government to prevent the COVID-19 epidemic and said that due to this intervention people were able to survive.
- In 70% of the villages most of the people were happy or satisfied with the medical facilities provided by the government (COVID testing, *Ayush*-kit, mask/sanitizer distribution, vaccination, awareness etc.), while in 16% of the villages people expressed dissatisfaction. The remaining 14% villages had mixed reactions.
- In 70% villages, most of the people praised or expressed satisfaction over the steps taken by the government during the second wave of the pandemic. In 9% of the villages, people in general, criticized the efforts of the government, while in 21% the village residents generally gave a mixed response.

***

# कोविड-19 महामारी के प्रभाव

**(अध्ययन: अप्रैल-जून 2021)**

उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान अल्मोड़ा

# विषय-सूची


| क्र. | विषय | पृष्ठ |
|---|---|---|
| 1 | भूमिका | 1 |
| 2 | गाँवों में वायरस से संक्रमित और बीमार हुए लोगों की संख्या | 2 |
| 3 | उपचार घर पर/अस्पताल में | 4 |
| 4 | वायरस के कारण मौतें | 4 |
| 5 | महामारी की दूसरी लहर के दौरान वापस लौटे प्रवासियों का विवरण | 5 |
| 6 | पिछले साल और इस बार के गाँव के हालातों में मुख्य अंतर | 7 |
| 7 | सबसे ख़राब प्रभाव क्या अनुभव किया गया | 7 |
| 8 | गाँवों में किन चीजों पर प्रभाव नहीं/बहुत कम अनुभव किया गया | 8 |
| 9 | लोगों के आपसी रिश्तों पर क्या मुख्य प्रभाव पड़ा? | 9 |
| 10 | गाँवों में सामाजिक धार्मिक आयोजनों पर प्रभाव | 9 |
| 11 | गाँव में रह रहे किन परिवारों की आय पर बहुत ज्यादा असर पड़ा? | 10 |
| 12 | रोजगार और आय में कमी का लोगों की जीवनचर्या पर प्रभाव | 11 |
| 13 | बहुत ज्यादा मुसीबत का सामना कर रहे परिवार और परेशानियाँ | 11 |
| 14 | वापस लौटे प्रवासियों में से कितने गाँव में रहने का इरादा रखते हैं | 13 |
| 15 | गाँव के निवासियों और प्रवासियों के मुख्य सुझाव | 15 |
| 16 | सरकार द्वारा प्रदान की गयी चिकित्सा-सुविधायें/ प्रतिक्रिया | 16 |
| 17 | महामारी से निपटने के सरकार के प्रयासों पर लोगों की प्रतिक्रिया | 17 |

## कोविड-19 महामारी के प्रभाव (अध्ययन: अप्रैल-जून 2021)

यह अध्ययन उत्तराखण्ड के पहाड़ी गावों में कोविड-19 महामारी की दूसरी लहर के प्रभावों को समझने के उद्देश्य से किया गया है. अध्ययन उत्तराखण्ड के 5 जनपदों- अल्मोड़ा, बागेश्वर, चमोली, चम्पावत और पिथौरागढ़ में स्थित 6 ग्राम-समूहों के कुल 44 गाँवों/तोकों में लोगों की आम राय के आधार पर किया गया है.

अध्ययन के लिये तैयार की गयी एक प्रश्नावली को हमारी सहयोगी संस्थाओं के कार्यकर्ताओं और ग्राम शिक्षण केन्द्र की संचालिकाओं द्वारा अप्रैल से जून 2021 के दौरान सम्बन्धित गांवों के कुल 1,101 लोगों (579 महिलायें और 522 पुरुष) के साथ बातचीत तथा गाँव की दशा को देख-सुनकर भरा गया है.

पिछले साल (2020) कोविड-19 महामारी की शुरुआत और इसे नियंत्रित करने के उद्देश्य से राष्ट्रीय स्तर पर लगाये गये लॉकडाउन के असर को जानने के लिये भी एक ऐसा ही प्रयास किया था. इस अध्ययन में यह जानने की भी कोशिश की है कि इन गाँवों में महामारी की दूसरी लहर का प्रभाव पहली लहर जैसा ही था या उससे भिन्न.

| कार्यक्षेत्र/ वि.ख./जनपद | गांवों/तोकों की संख्या और नाम |
|---|---|
| मैचून (वि.ख. धौलादेवी, अल्मोड़ा) | मनिआगर, मौनी, बान्ठोक, कसून, पल्यूं (5) |
| शामा (वि.ख. कपकोट, बागेश्वर तथा मुनस्यारी पिथौरागढ़) | गोगिना, मल्खा दुगर्चा, नामिक (3) |
| गणाई गंगोली (वि.ख. गंगोलीहाट, पिथौरागढ़) | भालूगाड़ा, फडियाली, भन्याणी, ग्वाड़ी, किमतोला (5) |
| पाटी (वि.ख. पाटी, चम्पावत) | तोली, जनकांडे, कमलेख, सरमोली, गरसाड़ी, जेरोली, गूम, लखनपुर, बिसारी, भट्यूणा (10) |
| बधाणी (वि.ख. कर्णप्रयाग व गैरसैण चमोली) | पुडियाणी, भटग्वाली, मालई, चौण्डली, जाख, सुन्दरगाँव, बैनोली, छातोली, कुकड़ई और बधाणी (10) |
| गोपेश्वर (वि.ख. दशौली, चमोली) | सिरोली, देवलधार, मण्डल, खल्ला, ग्वाड़, कोटेश्वर, बछेर, कठूड़, बमियाला, बणद्वारा, कांडई (11) |
| | गांवों की संख्या= 44 |

1. **गाँवों में वायरस से संक्रमित और बीमार हुए लोगों की संख्या:** प्राप्त आंकड़ों से पता लगता है कि 44 गांवों में औसतन 1.28 प्रतिशत आबादी वायरस से संक्रमित हुई. अलग-अलग क्षेत्रों में संक्रमितों की संख्या में भी काफी अंतर दिखता है. शामा क्षेत्र के तीन गांवों में किसी भी ब्यक्ति में संक्रमण की पुष्टि नहीं हुई, जबकि गणाई गंगोली में सबसे अधिक 3.48 प्रतिशत आबादी में संक्रमण की पुष्टि हुई. मैचून में 0.56, कर्णप्रयाग/गैरसैण में 0.76, पाटी में 1.79 और गोपेश्वर में 2.07 प्रतिशत आबादी में संक्रमण की पुष्टि हुई.

इन गांवों में अप्रैल-जून 2021 की अवधि में कोविड19 से संक्रमित हुए व्यक्तियों की कुल संख्या 276 है जो पिछले साल की अपेक्षा (24,135 आबादी में कुल 21 व्यक्ति 0.08 प्रतिशत) बहुत ज्यादा रही है. पिछले साल 60 गाँवों में से केवल 11 गाँवों में ही कोविड संक्रमण के मामले आये थे लेकिन इस बार दो-तिहाई (66%) गाँवों में कोविड19 संक्रमण के प्रमाणित मामले थे. वास्तविक संख्या इससे अधिक रहने का अनुमान है, क्योंकि जिन गाँवों में कोविड जांच नहीं हुई वहाँ भी काफी लोगों में खाँसी, बुखार, गले में संक्रमण इत्यादि लक्षण पाये गये. साथ ही जिन गाँवों में वायरस संक्रमण के पुष्ट मामले दर्ज किये वहाँ पर भी वास्तविक संख्या ज्यादा होने की आशंका है. इसका एक कारण दूरदराज के गांवों में टेस्टिंग की सुविधा का न होना था. उदाहरण के लिये मैचून क्षेत्र के बान्ठोक और कसून गांवों में टेस्टिंग नहीं हुई. बागेश्वर जिले के गोगिना व मलखा दुगर्चा और पिथौरागढ़ जिले की नामिक ग्राम-पंचायत में किसी भी व्यक्ति में संक्रमण की सूचना नहीं है, जबकि लोगों में खाँसी, बुखार, सिर-दर्द आदि लक्षण आम तौर पर देखे गये. गणाई गंगोली क्षेत्र के 5 गाँवों में 37 व्यक्तियों में संक्रमण की पुष्टि हुई जबकि 115 व्यक्तियों में रोग के लक्षण पाये गये. इसी क्षेत्र के किमतोला गांव में केवल 1 व्यक्ति की कोविड जांच हुई और पॉजिटिव पाये जाने के बाद अस्पताल में उपचार के दौरान मृत्यु हो गयी. लेकिन इस गाँव में 14 अन्य लोगों में रोग के लक्षण दिखे जिनकी जांच नहीं हो सकी, परन्तु 3 मरीज़ों की मृत्यु हो गयी.

संक्रमण के लक्षण वाले अनेक लोगों ने जांच इसलिये भी नहीं करायी कि कहीं जांच में कोरोना न निकल जाय. उन्हें डर था कि पुष्टि होने पर 10 दिन तक अस्पताल में भर्ती होना पड़ेगा या उनके साथ गाँव में सामाजिक-भेदभाव किया जायेगा.

| क्र | क्षेत्र/ग्राम -संकुल | गाँवों की संख्या | गाँवों की कुल आबादी | वायरस से संक्रमित व्यक्तियों का विवरण | | | | | संक्रमण के कारण मौतें | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | कुल संख्या | निवासी | प्रवासी | महिलायें | पुरुष | महिला | पुरुष |
| 1. | मैचून | 5 | 2499 | 14 | 14 | 0 | 7 | 7 | 0 | 0 |
| 2. | शामा | 3 | 2435 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |
| 3. | गणाई गंगोली | 5 | 1062 | 37 | 33 | 4 | 20 | 17 | 0 | 1 |
| 4. | पाटी | 10 | 3175 | 57 | 39 | 18 | 14 | 43 | 0 | 0 |
| 5. | बधाणी | 10 | 6687 | 51 | 39 | 12 | 10 | 41 | 0 | 2 |
| 6. | गोपेश्वर | 11 | 5640 | 117 | 113 | 4 | 51 | 66 | 1 | 1 |
| | | **44** | **21498** | **276** | **238** | **38** | **102** | **174** | **1** | **4** |

लिंग के अनुसार देखें तो वायरस से संक्रमित हुए व्यक्तियों में 63% पुरुष और 33% महिलायें हैं. कुल संक्रमितों में 86% गाँव में रह रहे लोग थे जबकि 14% बाहर से गाँव में लौटे हुए प्रवासी थे. लौट कर आये प्रवासियों की कुल संख्या 519 थी. इनमें से 7% वायरस से संक्रमित हुए.

आयु-वर्ग के अनुसार सबसे ज्यादा (44%) संक्रमित व्यक्ति 36-59 आयु-वर्ग और उसके बाद 18-35 आयु-वर्ग में थे. जबकि सबसे कम (8.3%) 18 वर्ष से कम आयु-वर्ग के थे.

| क्र | क्षेत्र/ग्राम-संकुल | महिला | | | | पुरुष | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | <18 | 18-35 | 36-59 | >60 | <18 | 18-35 | 36-59 | >60 |
| 1. | मैचून | 0 | 4 | 3 | 0 | 0 | 2 | 5 | 0 |
| 2. | शामा | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |
| 3. | गणाई गंगोली | 10 | 2 | 6 | 2 | 2 | 7 | 6 | 2 |
| 4. | पाटी | 1 | 3 | 8 | 2 | 0 | 12 | 19 | 12 |
| 5. | कर्णप्रयाग/ गैरसैण | 0 | 3 | 6 | 1 | 0 | 8 | 28 | 5 |
| 6. | गोपेश्वर | 6 | 20 | 21 | 4 | 4 | 33 | 21 | 8 |
| | | **17** | **32** | **44** | **9** | **6** | **62** | **79** | **27** |

**उपचार घर पर या अस्पताल में:** अधिकतर लोग (86%) घर पर रह कर ही स्वस्थ हो गये. इनके द्वारा घरेलू और एलोपैथिक, दोनों तरह की दवाओं का सेवन किया गया. केवल 14% संक्रमित व्यक्ति ही अस्पताल में भर्ती हुए. अस्पताल में भर्ती मरीजों में से 87.5% स्वस्थ हो गये, जबकि 12.5% की मृत्यु हुई.

| क्र. | क्षेत्र/ग्राम-संकुल | कुल संक्रमित | होम आइसोलेशन में रहे | अस्पताल में भर्ती हुए |
|---|---|---|---|---|
| 1. | मैचून | 14 | 14 | 0 |
| 2. | शामा | 0 | 0 | 0 |
| 3. | गणाई गंगोली | 37 | 36 | 1 |
| 4. | पाटी | 57 | 49 | 8 |
| 5. | कर्णप्रयाग/ गैरसैण | 51 | 46 | 5 |
| 6. | गोपेश्वर | 117 | 91 | 26 |
| | | 276 | 236 (86%) | 40 (14%) |

**वायरस के कारण मौतें:** संक्रमित व्यक्तियों में से कुल 5 मौतें हुई. इसमें 4 पुरुष और 1 महिला शामिल थी. मृत्यु-दर 1.8% है.

| संकुल व गाँव | आयु | लिंग | प्रवासी/ निवासी | मृत्यु घर/अस्पताल | क्या किसी गंभीर बीमारी से पीड़ित थे? |
|---|---|---|---|---|---|
| गणाई गंगोली- किमतोला | 61 | पुरुष | प्रवासी | सुशीला तिवारी अस्पताल हल्द्वानी | नहीं |
| कर्णप्रयाग- जाख | 56 | पुरुष | निवासी | बेस अस्पताल श्रीनगर | नहीं |
| कर्णप्रयाग- चौण्डली | 62 | पुरुष | प्रवासी | अस्पताल से घर आने के बाद | नहीं |
| गोपेश्वर- कोटेश्वर | 84 | पुरुष | निवासी | अस्पताल से घर आने के बाद | नहीं |
| गोपेश्वर- मंडल | 46 | महिला | निवासी | अस्पताल में | नहीं |

**महामारी की दूसरी लहर के दौरान वापस लौटे प्रवासियों का विवरण:**

मार्च 2020 में कोविड 19 वायरस के कारण सम्पूर्ण भारत में लॉकडाउन लगने के बाद उत्तराखण्ड के गाँवों में बड़ी संख्या में प्रवासी वापस आये थे. दूसरी लहर के दौरान अपेक्षाकृत बहुत कम (एक-तिहाई) प्रवासी वापस आये. जहाँ पिछले साल वापस आये प्रवासी इन गांवों की कुल जनसँख्या का 8.4% थे वहीं दूसरी लहर के दौरान लौटे प्रवासी गाँवों की कुल आबादी का केवल 2.7% थे.

| क्र. | क्षेत्र/ग्राम-संकुल | गाँवों की कुल जनसंख्या | कुल प्रवासी | पुरुष | महिलायें | बच्चे-लड़के/लडकियां | | टिप्पणी: कहाँ थे, क्या काम करते थे आदि विवरण |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | B | G | |
| 1. | मैचून (धौलादेवी/ भैंसियाछाना अल्मोड़ा) गाँव-5 | 2499 | 103 | 56 | 9 | 20 | 18 | लौट कर आये प्रवासी गांवों की जनसँख्या का 4.1% हैं. लगभग 32% अल्मोड़ा जिले में, 19% राज्य के नैनीताल,उधम सिंह नगर जिलों में और 49% दिल्ली, उत्तर प्रदेश, आंध्रप्रदेश राज्यों में कार्यरत थे. अधिकांश होटलों, प्राइवेट कंपनी में या ड्राईवर के तौर पर कार्यरत थे. |
| 2. | गणाई गंगोली (पिथौरागढ़) गाँव-5 | 1062 | 60 | 49 | 4 | 4 | 3 | लौट कर आये प्रवासी गांवों की जनसँख्या का 5.6% हैं. इनमें 78% राज्य के अल्मोड़ा, नैनीताल, उधम सिंह नगर और बागेश्वर जिलों में तथा 22% दिल्ली में कार्यरत थे. अधिकांश फैक्ट्री (सिडकुल), प्राइवेट कंपनी, होटलों, दुकानों में कार्यरत थे. |
| 3. | पाटी (चम्पावत) गाँव-10 | 3175 | 181 | 83 | 40 | 32 | 26 | लौट कर आये प्रवासी गांवों की जनसँख्या का 5.7% हैं. इनमें से 8% चम्पावत ज़िले में, 42% प्रदेश के उधम सिंह नगर व नैनीताल जिलों में जिलों में और 50% प्रदेश के बाहर दिल्ली, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र राज्यों में काम कर रहे थे. अधिकांश प्राइवेट कम्पनी, फैक्ट्री, बेकरी, दुकान में कार्यरत थे. कुल 5 महिलाओं में से |

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | | 3 उत्तराखण्ड में और 2 राज्य के बाहर रोजगार कर रही थीं. |
| 4. | कर्णप्रयाग/ गैरसैण (चमोली) गाँव- 10 | 6687 | 122 | 70 | 15 | 23 | 14 | लौट कर आये प्रवासी गांवों की जनसँख्या का 1.8% हैं. लगभग 8% अपने जिले में, 29% राज्य के देहरादून व् हरिद्वार जिलों में तथा 63% दिल्ली, हरियाणा और गुजरात राज्यों में रह रहे थे. इनमें से अधिकतर होटलों और प्राइवेट कम्पनी में कार्यरत थे जबकि कुछ देहरादून में पढ़ाई कर रहे थे. केवल 2 महिलायें (उत्तराखंड के बाहर) रोजगार कर रही थीं (छातोली). |
| 5. | गोपेश्वर/ दशौली (चमोली) गाँव-11 | 5640 | 53 | 33 | 8 | 8 | 4 | लौट कर आये प्रवासी गांवों की जनसँख्या का 0.93% हैं. लगभग 15% अपने ज़िले में, 21% राज्य के अन्य ज़िलों (देहरादून, नैनीताल) और 64% राज्य से बाहर दिल्ली, राजस्थान, महाराष्ट्र, गुजरात, गोवा आदि राज्यों में थे. अधिकतर प्राइवेट कंपनी या होटल में काम कर रहे थे. |
| **कुल- 41*** | | **19,063** | **519** | **291** | **76** | **87** | **65** | |

*शामा क्षेत्र के आँकड़े शामिल नहीं हैं.

कुल प्रवासियों में से 49% उत्तराखण्ड में रह रहे थे. इनमें से 13% अपने ही जिले में तथा 36% उत्तराखण्ड के अन्य जिलों में रह रहे थे. 51% उत्तराखण्ड से बाहर अन्य राज्यों में रह रहे थे. अधिकतर प्रवासी प्राइवेट कंपनी, होटल/रेस्टोरेंट, दुकानों इत्यादि में कार्यरत थे.

इन प्रवासियों में 58% पुरुष, 16.37% महिलाएँ और 25.54% बच्चे हैं. बच्चों में 57.69% लड़के तथा 42.3% लडकियाँ हैं. अगर वयस्कों के आंकड़े देखें तो प्रवासियों में 79% पुरुष और 21% महिलाएँ हैं. रोजगार कर रही प्रवासी महिलाओं की कुल संख्या 9 (वयस्क महिला प्रवासियों का 7%) थी, अन्य गृहणी के रूप में थीं.

**पिछले साल और इस बार के गाँव के हालातों में मुख्य अंतर :** सभी गाँवों में लोगों का यह मानना था कि दोनों सालों के हालातों में अंतर हैं.

1. पिछले साल की अपेक्षा दूसरी लहर के दौरान संक्रमण संक्रमण बहुत अधिक फैलने तथा गाँवों में डर का वातावरण होने की बात सबसे ज्यादा कही गयी (61% प्रपत्र). पिछले साल देश में कोरोना वायरस आया तो लोगों की आम धारणा यही थी कि यह वायरस हमारे गाँव तक नहीं पहुँच सकता. लेकिन जब बीमारी गाँव तक आ गयी तो बहुत भय लगने लगा. **"उस समय (2020) बीमारी तो थी, परन्तु वह शहरों में थी. इस साल गाँव में भी बीमारी का प्रकोप बहुत ज्यादा पाया गया" (जाख, चमोली)**
2. पिछली बार की अपेक्षा कम प्रवासी गाँवों में लौटे. इसका मुख्य कारण यह था कि पिछली बार की तरह देशव्यापी सम्पूर्ण लॉकडाउन नहीं लगाया गया और रोजगार करने की अनुमति भी थी. यह बात 23% प्रपत्रों में दर्ज है.
3. पिछले साल सरकार द्वारा देशव्यापी सम्पूर्ण लॉकडाउन लगाने तथा संस्थागत पृथक-वास (institutional quarantine) की व्यवस्था होने के कारण गांवों में लोग सुरक्षित बचे रहे (23% प्रपत्र) लेकिन इस बार ऐसा नहीं किया गया. इसे कई लोगों ने संक्रमण फैलने के लिये जिम्मेदार माना है.
4. कुछ गाँवों से पिछली बार की अपेक्षा ज्यादा आर्थिक तंगी होने (बेरोजगारी तथा बचत ख़त्म हो जाने के कारण) की बात कही गयी. **"2020 में लोगों के पास बचत के पैसे थे... 2021 में बचत भी नहीं रही" (गोगिना, बागेश्वर)**
5. पिछले साल कोरोना वायरस संक्रमण लोगों के लिये बिल्कुल नया था जो पहले देखा-सुना नहीं था. लेकिन इस बार लोगों को वायरस और इसके संक्रमण से बचने के उपायों के बारे में जानकारी थी. इसके अलावा इस बार बचाव के लिये टीकाकरण भी हो रहा था (14% प्रपत्र).

**इस बार सबसे ख़राब प्रभाव क्या अनुभव किया गया:**

- गांवों में कोविड19 वायरस संक्रमण की दूसरी लहर के दौरान सबसे ख़राब असर बेरोजगारी बताया/समझा गया (45%). सबसे बुरा प्रभाव गाँव लौटकर आये प्रवासियों और उनके परिवारों में हुआ. वे सभी छोटी-मोटी प्राइवेट नौकरी कर रहे थे पर उनका काम बन्द हो गया. **"जो लोग नीचे (मैदानी क्षेत्र) रहते थे जब वे घर आये तो उनके पास खाने के लिये पैसे नहीं थे..." (मलखा दुगर्चा, बागेश्वर).** इसके अलावा बहुत से गाँवों में 'मनरेगा' का काम भी बंद रहा तथा

निर्माण-सामग्री की दुकानों के बंद रहने से स्थानीय कामगार भी बेरोजगार हो गये.

- बेरोजगारी के बाद सबसे ज्यादा (41% प्रपत्रों में) असर स्कूली बच्चों की शिक्षा पर अनुभव किया गया. ज्यादातर बच्चों को स्मार्ट-फ़ोन और इंटरनेट सुलभ नहीं है. दूरदराज़ के बहुत से गाँवों में फ़ोन/इन्टरनेट सिग्नल भी नहीं रहता. इसके अलावा अधिकांश माता-पिता/अभिभावक स्वयं कम पढ़े-लिखे हैं जिस कारण अपने बच्चों को पढ़ाने-लिखाने में असमर्थ हैं. संक्रमण के खतरे और सरकार के कोविड दिशा-निर्देशों को ध्यान में रखते हुए ग्राम शिक्षण केन्द्र भी एक-डेढ़ महीने बंद करने पड़े (शिक्षिका द्वारा बच्चों के घर जाकर किताबें देने और कुछ गतिविधियाँ कराने की कोशिश की गयी). **“गाँव में कोविड19 महामारी का सबसे बुरा प्रभाव बच्चों पर हुआ है. बच्चों की पढ़ाई रुक गयी है. स्कूल, कॉलेज सब बन्द हो गये. इस कारण बच्चों का पढ़ाई से ध्यान ही हट गया.” (छातोली, चमोली)**

  **“स्मार्ट फ़ोन की सुविधा कुछ ही लोगों के पास है” (भन्याणी, पिथौरागढ).**

- वायरस से संक्रमित होने का भय भी सबसे ख़राब असर के रूप में अनुभव किया गया (32% प्रपत्र). गूम (पाटी) में लोग इस बात से बेहद डरे थे कि **“सांस बन्द होने की बीमारी पहाड़ में आती है तो अस्पताल जाने तक मृत्यु हो सकती है”**. भट्यूड़ा (पाटी) गाँव के लोगों का कहना था कि **“हमारे रिश्तेदार, जो बाहर शहरों में रहते हैं, कोरोना से मर रहे हैं; अगर यह बीमारी यहाँ आएगी तो गाँव के गाँव खाली हो जायेंगे”.** संक्रमण के लक्षणों वाले बहुत से लोग न तो जांच करा रहे थे न अपनी बीमारी के बारे में किसी को बता रहे थे क्योंकि उन्हें डर था कि जबरन अस्पताल में भर्ती कर दिया जाएगा.
- गाँव में सामाजिक-धार्मिक कार्यक्रम, उत्सव, संगठन की बैठक/गोष्ठी आदि आयोजन नहीं हो पाना (9% प्रपत्र) भी बुरे असर के रूप में देखा गया.

**गाँवों में किन चीजों पर प्रभाव नहीं/बहुत कम अनुभव किया गया:**

- सबसे ज्यादा (68% प्रपत्र) कृषि, पशुपालन व दुग्ध-व्यवसाय, सब्जी-उत्पादन और गाँव में रहकर जीवन-यापन कर रहे परिवारों पर महामारी की दूसरी लहर के दौरान सबसे कम असर पड़ने की बात दर्ज़ की गयी है. कहीं-कहीं पर दूध, सब्जी आदि को बेचने में थोड़ी समस्या आयी लेकिन ज्यादा प्रभाव नहीं पड़ा.
- राशन तथा खाने-पीने की अन्य आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति पर असर नहीं पड़ने का उल्लेख 20% प्रपत्रों में किया गया है.

- गाँव के अन्दर रोजगार पर प्रभाव नहीं पड़ने का उल्लेख 11% प्रपत्रों में किया गया है.
- 11% प्रपत्रों में सरकारी कर्मचारियों पर महामारी का आर्थिक दुष्प्रभाव नहीं पड़ने का उल्लेख किया गया है.

वायरस संक्रमण की पहली लहर (2020) के दौरान भी उपरोक्त गतिविधियाँ प्रभावित नहीं हुई थीं. केवल एक अंतर था कि दूसरी लहर के दौरान गाँव/स्थानीय-स्तर पर श्रमिकों को काम करने की अनुमति थी इसलिये पिछले साल जितना गंभीर प्रभाव नहीं पड़ा.

**लोगों के आपसी रिश्तों पर क्या मुख्य प्रभाव पड़ा?**

- 68% प्रपत्रों में उल्लेख है कि वायरस का अत्यधिक भय होने के कारण लोगों ने न केवल पड़ोस के गाँवों में, बल्कि गाँव के अन्दर भी अपने परिचितों/सम्बन्धियों से मिलना-जुलना बंद कर दिया.
  **-"आपस में लोग कम मिलजुल रहे थे, यहाँ तक कि बच्चों को भी नहीं मिलने दिया गया" (लखनपुर, पाटी),**
  **-"लोग अपने रिश्तेदारों से नहीं मिल पा रहे थे क्योंकि नीचे से कहा गया कि कोई अपने गाँव से दूसरे गाँव नहीं जायेगा" (मलखा दुगर्चा, बागेश्वर)**
- ज्यादातर सामाजिक-धार्मिक आयोजन रद्द या स्थगित कर दिए गये. अन्य आयोजनों को सादगी के साथ सम्पन्न किया गया और कोविड19 दिशानिर्देशों के अनुरूप सीमित संख्या में लोग शामिल हुए (20% प्रपत्रों में उल्लेख).
- कुछ प्रपत्रों में उल्लेख किया गया है कि खाँसी, सर्दी, बुखार के लक्षण वाले लोगों से बहुत डर लग रहा था और जो क्वारंटीन में रह रहे थे लोगों ने उनकी सहायता नहीं की. कहीं-कहीं लोग पीड़ित व्यक्तियों की मदद करने के बजाय उनसे झगड़ रहे थे.
- कहीं पर प्रवासियों के सपरिवार वापस आने से घरों में सीमित स्थान या गाँव में सीमित संसाधन (पानी आदि) होने के कारण आपसी रिश्तों में तनाव रहा.
  दूरस्थ गांवों में आपसी रिश्तों में ख़ास असर नहीं पड़ने तथा खेती के कार्यों में पहले की तरह आपसी सहयोग किये जाने का उल्लेख है.

**गाँवों में सामाजिक धार्मिक आयोजनों पर प्रभाव:**

पिछली लहर की तरह ही दूसरी लहर के दौरान भी सभी गाँवों में सामाजिक और धार्मिक आयोजनों पर गंभीर दुष्प्रभाव पड़ा.

- सामाजिक/धार्मिक समारोह स्थगित या रद्द करने पड़े.
- गाँवों में जिन सामाजिक/धार्मिक समारोहों- विवाह, मुंडन, पूजा/यज्ञ इत्यादि को मजबूरी में आयोजित करना पड़ा उन्हें सरकार द्वारा जारी किये गये कोविड19 दिशानिर्देशों के अनुरूप सादगी के साथ सम्पन्न किया गया.

  **- "काजल की शादी में चहल-पहल कम थी. लोग भी कम आये थे. गाँव में होने वाली कर्ण-पूजा में भी बहुत कम लोग शामिल हुए." (कुकड़ई, कर्णप्रयाग, चमोली).**

  **- "आशा की शादी में गाँव के आधे लोग ही शामिल हुए, जबकि बाहर से कोई नहीं आया." (छातोली, कर्णप्रयाग, चमोली)**

  **-शादियों में डीजे, बैंड आदि नहीं मंगाये गये. लोग भीड़भाड़ वाले आयोजनों से बच रहे हैं" (किमतोला, गणाई, पिथौरागढ)**

  **- "गाँव में नंदा-अष्टमी पर्व का आयोजन होता था. गाँव की सभी 'ध्याणी' (शादीशुदा बेटियाँ) ससुराल से मायके आती थीं. उनका आना-जाना भी बन्द है." (मालई, चमोली)**

  **"देव-कार्य पहले जहाँ अधिक लोगों की उपस्थिति में होता था अब सिर्फ पंडित ही कार्य सम्पन्न कर रहे हैं." (सिरौली, गोपेश्वर)**
- संस्था द्वारा बालमेले, महिला सम्मलेन, गोष्ठी इत्यादि का आयोजन नहीं किया जा सका.
- ग्राम सभा, महिला संगठनों की मासिक की बैठकें आयोजित नहीं हुईं.

**गाँव में रह रहे किन परिवारों की आय पर बहुत ज्यादा असर पड़ा?**

सबसे ज्यादा प्रभाव बाहर से गाँव में लौटे हुए प्रवासियों और उनके परिवारों पर पड़ा है जो बेरोजगार हो गये (73% प्रपत्रों में उल्लेख). इनके बाद सबसे ज्यादा प्रभावित हुए लोग गाँव/आसपास के दुकानदार, टैक्सी ड्राइवर/मालिक, होटल/ढाबों में काम करने वाले या अन्य स्वरोजगार करने वाले लोग थे जिनका काम-धंधा बन्द या मंद हो गया (32% प्रपत्रों में उल्लेख). इसके अलावा दैनिक मजदूरी पर काम करने वालों पर भी अधिक प्रभाव हुआ क्योंकि आसपास के गाँवों में आना-जाना बन्द होने, 'मनरेगा' के अंतर्गत काम बन्द रहने, निर्माण-सामग्री की आपूर्ति बाधित होने आदि के कारण रोजगार पर पूर्ण या आंशिक तौर पर असर पड़ा. **"गाँव में कुछ लोग प्राइवेट नौकरी करते थे अथवा स्थानीय रोजगार से अपना घर चलाते थे... ये लोग महामारी के कारण अपने घर तक ही सीमित रह गये और घर-परिवार का पालन-पोषण करने तथा अपनी रोज़मर्रा की ज़रूरतों को पूरा करने में लाचार हो गये हैं." (मालई, चमोली)**

**रोजगार और आय में कमी का लोगों की जीवनचर्या पर प्रभाव:**

- सबसे ज्यादा अनुभव किया गया प्रभाव था कि बेरोजगार हुए लोग और उनके परिवार दैनिक ज़रूरत की चीज़ें खरीदने में असमर्थ हो गये (64% प्रपत्रों में उल्लेख). उन परिवारों की हालत ज्यादा ख़राब हो गयी जिनमें सदस्य तो ज्यादा हैं लेकिन कमाने वाला केवल एक व्यक्ति था और वह भी बेरोजगार हो गया. सरकार द्वारा मुफ्त राशन देने से ऐसे परिवारों को बहुत राहत मिली लेकिन तेल, मसाले, चीनी, चाय, साबुन, मंजन इत्यादि खरीदने के लिये रुपये नहीं थे. जिन परिवारों की स्थिति थोड़ी बेहतर थी उन्होंने भी केवल बहुत ज़रूरी चीज़ें ही खरीदी और अनावश्यक व्यय नहीं किया.
- बेरोजगारी और आय का कोई स्रोत नहीं रहने से परिवारों में मानसिक तनाव रहा. (16% प्रपत्र)
- कुछ परिवार देनदारियाँ नहीं चुका पा रहे थे और कुछ को दैनिक ज़रूरत की चीज़ें खरीदने के लिये क़र्ज़ लेना पड़ा. कुछ को अपने मकान-निर्माण का काम अधूरा छोड़ना पड़ा.
- लेकिन कुछ गाँवों में अधिकांश लोग खेती और पशुपालन पर निर्भर थे. वहाँ पर अनाज, दूध, सब्जी इत्यादि की कमी नहीं हुई और इनकी बिक्री से होने वाली आय पर भी महामारी का विशेष प्रभाव नहीं पड़ा. बहुत से प्रवासियों ने नकदी की कमी के कारण स्वयं सब्जी-उत्पादन शुरू किया तो कुछ परिवारों ने जंगली सब्जियों का सेवन किया.

**बहुत ज्यादा मुसीबत का सामना कर रहे परिवार और इनकी परेशानियाँ:**

| संकुल | परिवारों की संख्या | समस्याएँ/परेशानियाँ |
|---|---|---|
| मैचून | 22 | • मौनी में 15 परिवार- **"कमाने वाले सदस्यों को घर में रहना पड़ रहा है और घर में कोई रोजगार नहीं. खेती में मेहनत करके भी कुछ नहीं होता. करें तो क्या करें? जानवर पालते हैं तो बाघ मार देता है और खेती करें तो बन्दर, सुअर नुकसान पहुँचा रहे हैं".**<br>• मनिआगर में 4 परिवार- जिनके कोई सदस्य संक्रमित थे और अन्य को संक्रमण का डर था.<br>• पल्यूं में 3 परिवार- जो लोग दिल्ली मे रह रहे थे उनका काम बन्द |

| | | |
|---|---|---|
| | | होने के कारण उन्हें घर आना पड़ा लेकिन घर में मजदूरी नहीं मिली. |
| पाटी | 142 | • बिसारी में 15-20 परिवार- आमदनी का स्रोत बन्द होते ही मानसिक तनाव, स्कूल की फीस नहीं दे पा रहे, घर में अनाज, दाल, जरूरत की अन्य चीज़ें नहीं मिल पाना<br>• गरसाड़ी में 15-20 परिवार- शादी-ब्याह रोकने पड़े जिससे रिश्ते भी टूटे.<br>• जैरोली में 6 परिवार- मजदूरी न मिल पाना<br>• सरमोली में 4 परिवार- खाने-पीने की चीजों की कमी.<br>• जनकांडे में 20 परिवार- मानसिक तनाव<br>• गूम में 20 परिवार- बाज़ार में दूध नहीं बिका, 'मनरेगा' में काम नहीं मिला.<br>• लखनपुर में 10-15 परिवार- बाज़ार में दूध नहीं बिका या आधा ही बिक सका. |
| शामा/ गोगिना | 20 | • गोगिना में 4 परिवार हैं जिनमें से एक परिवार का मुखिया मानसिक रूप से अस्वस्थ है, पत्नी नेत्रहीन तथा माँ बहुत वृद्ध है. एक अन्य परिवार में मुखिया की पत्नी का निधन हो चुका था और वह मजदूरी करके अपने बच्चों को पाल रहा था.<br>• मलखा दुगर्चा में 6 परिवार ऐसे हैं जिनमें कमाने वाला एक था लेकिन खाने वाले ज्यादा लोग. उनकी तेल, चीनी आदि की ज़रूरतें पूरी नहीं हो पा रही थीं.<br>• नामिक गाँव में 10 परिवार जिनमें से कहीं तो कमाने वाला एकमात्र सदस्य बेरोजगार होकर गाँव आ गया. अन्य ऐसे परिवार जिनमें स्थानीय स्तर पर मजदूरी करने वालों को काम नहीं मिल पा रहा था. |
| गणाई गंगोली | 7 | • भालूगाड़ा में 5 परिवार- आमदनी कम और सामान मंहगा.<br>• ग्वाड़ी में एक प्रवासी परिवार लॉकडाउन में घर वापस आया लेकिन रोजगार नहीं होने के कारण दैनिक खर्च चलने में दिक्कतें आ रही थीं.<br>• किमतोला में एक प्रवासी परिवार आया. पुराना रोजगार नहीं रहा, गाँव में भी मजदूरी नहीं मिल पा रही और खेत बंजर हैं. कई परिवारों के राशन-कार्ड भी नहीं बने हैं. |
| कर्णप्रयाग/ गैरसैण | 57 | • पुडियाणी में 3 परिवार- होटलों, दुकानों में कम करने वाले. पैसों की कमी के कारण मुसीबतें. |

| | | |
|---|---|---|
| | | • चौण्डली में एक परिवार- कमाने वाले एकमात्र सदस्य की कोरोना से मृत्यु हो गयी. वर्तमान मुसीबतों के साथ भविष्य की भी चिंता है.<br>• छातोली में 9 परिवार- प्राइवेट नौकरियाँ थीं जो छूट गयी. इनके परिवार भी बड़े हैं. **"जो लोग बाहर से गाँव वापस आये उनकी खेतीबाड़ी भी नहीं है जिस कारण सब्जी, दालें आदि भी उन्हें बाज़ार से खरीदनी पड़ रही हैं."**<br>• बैनोली में 12 परिवार- रोजगार की समस्या के कारण आमदनी शून्य हो गयी. इस कारण दाल, तेल, नमक, साबुन, चाय-पत्ती आदि की ज़रूरतें पूरी नहीं कर पा रहे हैं.<br>• भटग्वाली में 8 परिवार- मजदूरी नहीं मिल रही और बाहर से आये प्रवासियों के पास खेतीबाड़ी नहीं है इसलिए ज़रूरत की सभी चीज़ें बाज़ार से खरीदनी पड़ रही हैं.<br>• बधाणी में 20 परिवार- छोटे-मोटे होटल-ढाबे चलाने वाले/ इनमें काम करने वाले टैक्सी ड्राइवर आदि बेरोजगार हो गये. |
| गोपेश्वर | 8 | ग्वाड़ गाँव में 8 परिवार- 'मनरेगा' में काम नहीं मिल रहा था और खेती की ज़मीन कम होने के कारण इससे गुजारा नहीं होता. देवलधार, बमियाला, कठूड़ गाँवों में भी 'मनरेगा' में रोजगार नहीं मिलने का ज़िक्र है लेकिन संकट की स्थिति नहीं आई:<br>• **"किसी भी परिवार को मुसीबत का सामना नहीं करना पड़ा. अपने घर में पैदा की गयी वस्तुओं तथा सरकार द्वारा दिए गये राशन पर लोग निर्भर रहे" (बछेर गाँव)**<br>• **"मुसीबत का सामना अभी तक किसी परिवार ने नहीं किया क्योंकि गाँवों में शहरों की अपेक्षा कुछ न कुछ रोजगार का साधन जुटा कर अपना पेट पाल ही लेते हैं." (काण्डई)** |

**लौटे प्रवासियों में से कितने गाँव में रहने का इरादा रखते हैं:**

पिछले साल की अपेक्षा इस बार कम प्रवासी गाँव में आये. इनमें से अधिकतर प्रवासी स्थिति में सुधार होते ही पुराने काम पर लौटना चाह रहे थे. **गोपेश्वर** क्षेत्र (चमोली) के जिन 11 गाँवों की सूचना है उनमें से 2 गाँवों (बणद्वारा और मण्डल) में दूसरी लहर के दौरान कोई प्रवासी नहीं लौटा जबकि खल्ला गाँव में केवल एक प्रवासी परिवार आया था जो वापस जाना चाहता था. अन्य 6 गाँवों में जो प्रवासी आये थे उनमें से सभी शहर वापस जाना चाह रहे थे. शेष गाँवों में भी इक्का-दुक्का प्रवासी ही गाँव में रहने का मन बना रहे थे.

चमोली जिले के कर्णप्रयाग/गैरसैण क्षेत्र के 10 गांवों में से मालई में कोई प्रवासी वापस नहीं आया. अन्य 5 गाँवों में भी 3 से 7 तक प्रवासी वापस आये. इस क्षेत्र के 6 गाँवों में एक भी प्रवासी गाँव में नहीं रहना चाहता था तथा शेष गाँवों में भी ज्यादातर की यही राय थी. **"वापस आये प्रवासियों में से किसी ने भी गाँव में रहना उचित नहीं समझा है. उनका मानना है की यहाँ अच्छी शिक्षा, अच्छे अस्पताल तथा अच्छी नौकरी, आजीविका कमाने का कोई साधन नहीं है" (सुन्दरगाँव).**

गाँव के लोगों और प्रवासियों की सोच में विरोधाभास भी दिखा **1. सुन्दरगाँव (चमोली): गाँव के लोगों का कहना था कि कोई व्यक्ति देश के किसी भी कोने में रहे तथा जो कुछ भी करे, अपना घर-गाँव नहीं भूलना चाहिये क्योंकि मुसीबत आने पर सब लोग गाँव की तरफ आते हैं. लेकिन प्रवासियों का कहना था कि पहाड़ जैसी, बल्कि उससे अच्छी सुविधायें हमें वहाँ प्राप्त हैं.**

**2. कोटेश्वर (चमोली): प्रवासी कह रहे हैं कि बीमारी कम होने पर वे शहर को लौट जायेंगे. गाँव के लोगों का कहना है कि गाँव में हवा, पानी आदि सब चीज़ शुद्ध है तथा अन्य रोजगार का साधन नहीं भी हुआ तब भी खेती करके काम चला सकते हैं".**

गणाई क्षेत्र (पिथौरागढ) के 5 में से 3 गाँवों में एक भी प्रवासी नहीं रुकना चाहता था तथा शेष 2 गाँवों में भी अधिकतर प्रवासी वापस जाना चाह रहे थे.

- **"यहाँ रोजगार होता तो यहीं रहते; नौकरी के लिये बाहर जाना ही पड़ेगा" (भालूगाड़ा).**
- **"इस बार दो लोग ही वापस आये जो काम खुलते ही वापस जायेंगे" (ग्वाड़ी).**

मैचून/पल्यूं क्षेत्र (अल्मोड़ा) में 5 में से 2 गाँवों में एक भी प्रवासी नहीं आया. अन्य 3 गाँवों में भी अधिकतर या सभी प्रवासी वापस जाना चाहते थे.

गोगिना-नामिक क्षेत्र में भी बहुत कम प्रवासी गाँव में रहना चाह रहे थे.

- **"लोग बोल रहे थे कि हम लोग गाँव में काम नहीं कर सकते हैं" (गोगिना).**
- **"वे चाहते हैं कि कोरोना जल्दी ठीक हो जाए और होटल खुल जायें जिससे वे जहाँ रहते थे वहाँ चले जायें और अपनी नौकरी कर सकें" (मलखा दुगर्चा).**
- **"बहुत से प्रवासी गाँव में रहकर मजदूरी का काम नहीं कर पा रहे हैं और खेतीबाड़ी का काम भी नहीं सीखा है. कुछ लोग, जो ये कर पा रहे हैं, घर पर रहना चाहते हैं. बाकी लॉकडाउन खुलने पर वापस चले जायेंगे" (नामिक).**

पाटी क्षेत्र (चम्पावत) के 10 गाँवों में से 5 में सभी तथा शेष 5 गाँवों में अधिकतर प्रवासी वापस जाना चाह रहे थे.

- **“गाँव के लोगों और प्रवासियों का कहना था कि घर में रहकर गुजर-बसर नहीं हो सकती क्योंकि कृषि पर जंगली जानवर और मौसम का परिवर्तन प्रभावी है” (भट्यूड़ा)**
- **“प्रवासियों का कहना है कि पहाड़ों में रोजगार की कमी है तथा हम लोगों का घर के कामों में मन कम लगता है...”(लखनपुर, पाटी)**

**गाँव के निवासियों और प्रवासियों के मुख्य सुझाव:**

- आम तौर पर सभी जगह गाँव में रह रहे लोगों और वापस आये हुए प्रवासियों का यह मानना था कि शहर की अपेक्षा गाँव का जीवन बेहतर है. यहाँ हवा-पानी शुद्ध है और ताज़ी सब्जियाँ, दूध और अन्न उपलब्ध है. लेकिन उनका यह भी कहना था कि गाँव में रोजगार नहीं होने के कारण लोग पलायन करने को मजबूर हैं. ज्यादातर लोगों ने गाँव में रोजगार के साधन बढ़ाने का सुझाव दिया.

  **-“गाँव में लोगों का सुझाव है कि घर में रह कर अपनी खेतीबाड़ी पर ध्यान देना चाहिये तथा इसी से अपना रोजगार चलाना चाहिये” (कुकड़ई, चमोली).**

  **-“गाँव के लोग व प्रवासी चाहते हैं कि अपने इलाके में ही स्वरोजगार के साधन- कुटीर उद्योग, पशुपालन, मुर्गीपालन आदि विकसित हों जिससे पलायन ना करना पड़े “ (बधाणी, चमोली).**

  **-“सरकार को पहाड़ी क्षेत्रों में ही रोजगार की व्यवस्था करनी चाहिये ताकि लोग रोजगार के साथ ही अपने घर-परिवार व खेती की देख-रेख कर सकें” (भन्याणी).**

- कृषि भूमि पर्याप्त नहीं है तथा खेतीबाड़ी में अन्य समस्याएँ हैं इसलिये अन्य क्षेत्रों में रोजगार बढ़ाने का प्रयास होना चाहिये. **“गाँव के लोग कहते हैं कि घर में ही रहो; आज तक जैसे समय निकला वैसे ही निकाल लेंगे. वापस आये लोग कहते हैं पहले का समय कुछ ठीक था. तब आज के जितने जंगली जानवर भी नहीं थे, सब मिलजुल कर समय निकलते थे और समय पर बारिश भी होती थी” (मौनी).** भट्यूड़ा (पाटी) में भी लोगों ने ऐसी ही बातें कहीं- **“गाँव के लोग एवं प्रवासियों का कहना था कि घर का कार्य, कृषि करके परिवार का भरण-पोषण नहीं हो सकता क्योंकि कृषि पर जंगली जानवरों और जलवायु-परिवर्तन का प्रभाव है.”**
- सरकार द्वारा दिये गये कोविड19 महामारी से बचाव के लिये लगाये गये प्रतिबंधों तथा जारी किये दिशा-निर्देशों को अधिकांश लोगों ने पसंद किया और कहा कि इस कारण लोग सुरक्षित बच पा रहे हैं. अधिकतर गाँवों से सुझाव आया है हमें इन दिशा-निर्देशों का पालन करना चाहिये. कुछ को यह शिकायत थी कि इस बार सरकार ने

पिछले साल की तरह कठोर प्रतिबन्ध नहीं लगाये जिस कारण उनके गाँवों में भी संक्रमण फैल गया.

**सरकार द्वारा संक्रमित रोगियों को प्रदान की गयी चिकित्सा-सुविधायें और लोगों की प्रतिक्रिया:**

- सरकार द्वारा अधिकतर गाँवों में वायरस से संक्रमण का पता लगाने के लिये टेस्टिंग की व्यवस्था की गयी लेकिन दूरस्थ गाँवों में लोगों की शिकायत थी कि उनके वहाँ टेस्ट नहीं हुए. इसके अलावा जहाँ टेस्टिंग हुई उनमें से भी अनेक गाँवों में पर्याप्त टेस्ट-किट उपलब्ध नहीं होने के कारण जरूरत से कम जाँचें की गयीं.
- संक्रमित व्यक्तियों को सरकार द्वारा 'आशा' वर्कर्स के माध्यम से 'आयुष किट' (दवाएँ, मास्क और सेनीटाइज़र) मुफ़्त वितरित किये गये. लेकिन सभी गाँवों में एक समान सुविधायें नहीं मिलीं. लोगों की यह शिकायत भी थी कि किट में जिन चीजों की सूची अंकित थी वे सब चीज़ें उसमें नहीं मिलीं, जैसे- थर्मामीटर और ऑक्सीमीटर नहीं था.
- टीकाकरण को लेकर एक तरफ़ लोगों में हिचकिचाहट/डर था कि टीका लगाने से बीमार पड़ जायेंगे लेकिन दूसरी तरफ़ इसकी मांग भी की जा रही थी.
- बहुत से गाँवों में लोगों ने सरकार द्वारा चलाये गये कोविड जागरूकता कार्यक्रम की प्रशंसा की और कहा कि इससे बीमारी पर नियंत्रण हुआ.

कुल मिलाकर 70% गाँवों में ज्यादातर लोग सरकार द्वारा प्रदान की गयी चिकित्सा-सुविधाओं से प्रसन्न या संतुष्ट थे जबकि 16% गाँवों में लोगों ने असंतोष प्रकट किया. शेष 14% गाँवों में मिलीजुली प्रतिक्रियाएं रहीं.

अल्मोड़ा जिले के मैचून क्षेत्र में सभी 5 गाँवों, चमोली जिले के गोपेश्वर क्षेत्र में 11 में से 10 गाँवों में, कर्णप्रयाग (चमोली) व पाटी (चम्पावत) क्षेत्र के 10 में से 8 गाँवों में इक्का-दुक्का गाँवों को छोड़कर अन्य गाँवों में लोगों ने सरकार की कोशिशों की सराहना की.

- **"सरकार द्वारा पहुंचाई गयी चिकित्सा व स्वास्थ्य सुविधाओं से सभी संतुष्ट हैं और कह रहें हैं कि सरकार इतना ख़याल रख रही है." (मौनी, मैचून)**
- **संक्रमित व्यक्तियों का सुचारु रूप में इलाज हो रहा है तथा दवाइयाँ भी दी जा रही हैं. (बमियाला, गोपेश्वर)**

लेकिन लेकिन कुछ गाँवों में लोग संतुष्ट नहीं थे. काण्डई और बछेर गाँवों (गोपेश्वर) में अधिकतर लोगों का कहना था इस बार महामारी में सरकार कुछ नहीं

कर रही है. सरकार द्वारा संक्रमित व्यक्तियों को सिर्फ आइसोलेशन किट उपलब्ध कराई गयी, अन्य किसी प्रकार की पूछताछ नहीं की गयी. चौण्डली (कर्णप्रयाग) में लोगों को यह ख़राब लगा कि संक्रमण से मरने वाले व्यक्ति के परिवार को सरकार द्वारा कोई सुविधा नहीं प्रदान की गयी.

- **किमतोला (गणाई, पिथौरागढ): "जो लोग संक्रमित थे या जिनमें सर्दी-बुखार के लक्षण थे, उन्हें स्वयं ही अपना उपचार करना पड़ा."**
- **भन्याणी (गणाई गंगोली, पिथौरागढ): "जो लोग बीमार पड़े उन्हें कोई इलाज नहीं मिला. लोगों ने अपने से दवा खरीदकर इलाज करवाया जिसके लिये मनमाना पैसा लिया गया."**
- **गरसाड़ी (पाटी): " लोगों का कहना था कि एक बार 'आशा' के माध्यम से दवा मिली, जांच आदि की सुविधा नहीं मिली."**
- **गोगिना (बागेश्वर) में लोगों का कहना था कि जो दवाई दी जा रही है वह ख़राब है. इसी क्षेत्र के मलखा दुगर्चा गाँव में भी कई लोगों ने ऐसी ही शिकायत की, जबकि कुछ का कहना था कि सरकार ने बड़ी जनसँख्या होने के बावजूद इतनी मुश्किल से हमें दवाई दी है तो हमारे लिये ये ठीक ही होगी.**

**महामारी से निपटने के सरकार के प्रयासों पर लोगों की प्रतिक्रिया:**

लगभग 70% गाँवों में लोगों ने महामारी की दूसरी लहर के दौरान सरकार द्वारा उठाये गये कदमों की प्रशंसा की या संतोष व्यक्त किया. केवल 9% गाँवों में लोगों ने आलोचना की, जबकि 21% ने मिलीजुली प्रतिक्रिया दी.

चमोली जिले के गोपेश्वर क्षेत्र में सभी गाँवों में सामान्यतया लोगों ने महामारी की रोकथाम/नियंत्रण के उद्देश्य से सरकार द्वारा लगाये प्रतिबन्धों को ठीक माना और समर्थन किया. साथ ही कोविड19 की जाँच के लिये कैंप लगाने व दवा, मास्क, सेनीटाइजर इत्यादि वितरित करने के लिये सरकार की तारीफ़ की. चमोली जिले के कर्णप्रयाग/गैरसैण क्षेत्र में 50% गाँवों में लोग सरकार की कोशिशों की तारीफ कर रहे थे लेकिन अन्य 50% गाँवों में लोगों को शिकायतें थीं. इनमें से 4 गाँवों में लोगों ने कहा कि सरकार को इस बार भी कड़ाई से लॉकडाउन लगाना चाहिये था, दूसरे राज्यों/जिलों से आने वाले लोगों पर पाबंदियां लगानी थीं और कुम्भ-मेला व चुनाव टाल देने थे. एक गाँव के लोगों को लॉकडाउन के कारण बच्चों की पढ़ाई चौपट हो जाने की शिकायत थी.

गणाई क्षेत्र में मिलीजुली प्रतिक्रिया रही. भालूगाड़ा गाँव में लोगों ने कहा कि सरकार इस बीमारी से निपटने के लिये पूरी कोशिश कर रही है. लेकिन अन्य गाँवों में सरकार से शिकायतें थीं या कोशिशों की सराहना के साथ-साथ आलोचना भी थी. जैसे

**भन्याणी : "सरकार प्रयास कर रही है लेकिन दूरदराज के गाँवों तक सुविधायें नहीं पहुँचती हैं. लोगों की कोरोना जांच नहीं की गयी और टीकाकरण केन्द्र भी बहुत दूर है जहाँ आने-जाने के लिये 400 रुपये किराया देना पड़ता है. इसलिए लोग टीकाकरण के लिये नहीं जा रहे हैं."** फडियाली और किमतोला में लोगों को शिकायत थी कि पिछली बार की तरह बाहर से आने वालों की जांच नहीं की गयी और न संस्थागत क्वारंटीन की व्यवस्था थी.

मैचून क्षेत्र के सभी गाँवों में लोग संतुष्ट थे, खासकर मुफ्त राशन, दवा, मास्क आदि प्रदान किये जाने से लोगों में संतुष्टि का भाव दिखा. मौनी गाँव में कुछ लोगों को शिकायत थी कि वैक्सीन की दूसरी ख़ुराक देने में देर कर दी.

पाटी क्षेत्र में लगभग 70% गाँवों में लोग सरकार द्वारा प्रदान की गयी राहत, चिकित्सा-सुविधाओं और महामारी की रोकथाम हेतु लगाये गए प्रतिबंधों से संतुष्ट और खुश दिखे. बिसारी गाँव में लोगों ने सरकार के प्रति आभार व्यक्त किया तो भट्यूड़ा के लोगों ने कहा कि "सरकार के प्रयास सराहनीय हैं". लेकिन अन्य दो-तीन गाँवों में लोगों की राय भिन्न थी. गरसाड़ी गाँव में लोगों ने कहा कि सरकार ने लॉकडाउन पहले ही लगा देना चाहिये था. तोली गाँव में एक-दो लोगों का कहना था की यह बीमारी पहाड़ में नहीं आ सकती, स्वास्थ्य विभाग के लोग फर्जी रिपोर्ट दे रहे हैं. लखनपुर में लोगों ने कहा कि सरकार द्वारा जो प्रयास किये जा रहे हैं वे गाँव तक नहीं पहुँच रहे हैं.

शामा क्षेत्र के गोगिना गाँव में लोगों को सरकार से सफाई, वैक्सीन, मास्क और सेनीटाइजर की अपेक्षा थी, जबकि मलखा दुगर्चा के कुछ लोगों का कहना था कि हमें सरकार को सहयोग करना चाहिये क्योंकि वह लोगों की भलाई के लिये रात-दिन कुछ न कुछ काम कर रही है ताकि लोग बच सकें.

***